खंड 4
बाज़ार की विफलताएँ

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 7 बाह्यताएँ तथा सार्वजनिक वस्तुएँ

संरचना

7.0 उद्देश्य

7.1 विषय प्रवेश

7.2 बाह्यताएँ (Externalities)

- 7.2.1 नकारात्मक बाह्यताएँ तथा दक्षता हीनताएँ (Negative Externalities and Inefficiencies)
- 7.2.2 सकारात्मक बाह्यताएँ तथा दक्षता हीनताएँ (Positive Externalities and Inefficiencies)

7.3 बाज़ार असफलता को सुधारने के तरीके (Ways of Correcting Market Failures)

- 7.3.1 पीगूवादी कर (Pigovian Tax)
- 7.3.2 विलयन तथा आंतरीकरण (Merger and Internalisation)
- 7.3.3 उत्सर्जन मानक तथा उत्सर्जन शुल्क (Emission Standards and Emission fee)
- 7.3.4 विलुप्त बाज़ार (Missing Market)
- 7.3.5 निजी सौदेबाज़ी तथा बातचीत : कोज़ प्रमेय (Private Bargaining and Negotiation: Coase Theorem)

7.4 सार्वजनिक वस्तुएँ (Public Goods)

7.5 सार्वजनिक वस्तुएँ तथा बाज़ार की असफलता (Public Goods and Market Failure)

- 7.5.1 मुफ़्तख़ोरी की समस्या (The Free-rider Problem)

7.6 सार्वजनिक वस्तुओं की इष्टतम व्यवस्था (Optimal Provision of Public Goods)

- 7.6.1 सैम्युल्सन – मुस्ग्रैव सिद्धांत (The Samuelson–Musgrave Theory)
- 7.6.2 सार्वजनिक वस्तुओं का स्थानीय प्रावधान : टाईबाउट प्राक्कल्पना (Local Provision of Public Goods: Tiebout Hypothesis)
- 7.6.3 सामाजिक चयन की समस्या : मतदान तंत्र (Social Choice Problem: Voting Mechanism)
- 7.6.4 सार्वजनिक वस्तुओं के प्रावधान में सरकार की भूमिका (Role of Government in Provision of Public Goods)

7.7 सार-संक्षेप

7.8 संदर्भ ग्रंथादि

7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

7.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्, आप सक्षम होंगे :

- बाह्यता की संकल्पना को परिभाषित करने में;

- बाह्यताओं तथा सार्वजनिक वस्तुओं की उपस्थिति में बाज़ार में असफलता की शर्तों को उदाहरण देकर स्पष्ट करने में;
- बाह्यताओं के परिणामस्वरूप उत्पन्न बाज़ार की असफलता को सुधारने में नियोजित विभिन्न तंत्रों का वर्णन करने में;
- सार्वजनिक वस्तु की संकल्पना की व्याख्या करने में; तथा
- सार्वजनिक वस्तुओं के अनुकूलतम प्रावधान को सुनिश्चित करने वाले तंत्र/समाधानों की चर्चा करने में।

7.1 विषय प्रवेश

एक आर्थिक अभिकर्ता के उपभोग (या उत्पादन) संबंधी निर्णय उन व्यक्तियों को भी प्रभावित करते हैं जो प्रत्यक्ष रूप से लेन-देन में शामिल नहीं होते हैं। ऐसे अप्रत्यक्ष प्रभाव प्रायः उनका सृजन करने वाले अभिकर्त्ताओं द्वारा गणना नहीं किए जाते हैं। पिछली इकाइयों में, हमने बाज़ार की उन स्थितियों पर विचार किया था जिनमें अभिकर्त्ताओं के (क्रेताओं तथा विक्रेताओं) के बीच वार्ता से संसाधनों का इष्टतम आवंटन (पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में) या उप-इष्टतम (अपूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में जैसे एकाधिकार, एकाधिकारिक, प्रतियोगिता, अल्पाधिकार) आवंटन होता है। इन सभी स्थितियों में हमने माना था कि वहाँ कोई भी बिना गणना का अप्रत्यक्ष प्रभाव शामिल नहीं है। अब हम उन मामलों का अध्ययन करेंगे जब कुशल निजी आवंटन अव्यवहार्य हो जाता है। अन्य शब्दों में, हम उस स्थिति पर विचार करेंगे जब बाज़ार इष्टतम आवंटन में असफल हो जाते हैं। बाज़ार की असफलता के कारण हो सकते हैं – बाह्यताओं की उपस्थिति, सार्वजनिक वस्तुएँ तथा सूचना की विषमता।

इस इकाई में हम बाह्यताओं तथा सार्वजनिक वस्तुओं की संकल्पना को जानेंगे। बाह्यता का संबंध एक अभिकर्ता के कार्यों का अन्य अभिकर्ता पर पड़ने वाले उस प्रभाव से है जिसकी गणना नहीं की जाती है। जब प्रभाव विपरीत या प्रतिकूल होता है, वह नकारात्मक बाह्यता कहलाता है और जब प्रभाव लाभकारी या हितकर होते हैं, तो सकारात्मक बाह्यता की स्थिति होती है। बाह्यता की उपस्थिति बाज़ार को असफलता की ओर ले जाती है। बाज़ार असफलता से हमारा अभिप्राय है, जब बाज़ार एक संतुलन कीमत या मात्रा पर पहुँचने में असमर्थ होता है। परिणामस्वरूप फर्म बहुत अधिक उत्पादन कर सकती है या बहुत कम उत्पादन कर सकती है जिसकी वजह से बाज़ार परिणाम अकुशल होता है।

हम शुरुआत, बाह्यता के अर्थ को परिभाषित करने से करेंगे। हम जानेंगे कैसे यह बाज़ार अकुशलताओं की ओर ले जाती है तथा इन्हें कैसे सुधारा जाता है। आगे हम सार्वजनिक वस्तु की संकल्पना पर चर्चा करेंगे। सार्वजनिक वस्तुएं, वे वस्तुएं होती हैं जो सभी उपभोक्ताओं को लाभ पहुँचाती हैं, परंतु जिनकी बाज़ार में या तो अल्प पूर्ति होती है या बिल्कुल भी पूर्ति नहीं होती है। एक शुद्ध सार्वजनिक वस्तु का सर्वोत्तम उदाहरण सड़कों पर प्रकाश के खंभे हैं। सड़कों पर प्रकाश के खंभों से आने वाला प्रकाश सभी के उपभोग के लिए सुलभ होता है तथा किसी को भी इसके उपभोग से वंचित नहीं किया जा सकता है। इस इकाई में हम सार्वजनिक वस्तु की संकल्पना को परिभाषित करेंगे कि कैसे यह निजी वस्तु से भिन्न है? तथा नीति-निर्धारक किन

समस्याओं का सामना करते हैं जब वह यह निर्णय लेते हैं कि कितनी मात्रा में सार्वजनिक वस्तु उपलब्ध करानी है?

7.2 बाह्यताएँ

बाह्यताएँ उत्पादकों के बीच, उपभोक्ताओं के बीच या उपभोक्ता और उत्पादकों के बीच उत्पन्न हो सकती हैं। एक बाह्यता तब घटित होती है जब एक व्यक्ति की क्रिया, जैसे कि उपभोग या उत्पादन, एक असंबद्ध व्यक्ति के क्षेम को प्रभावित करती है। बाह्यता शब्द इस तथ्य से आता है कि किसी क्रिया या लेन-देन से बाह्य व्यक्ति उस वस्तु के उपभोग या उत्पादन से प्रभावित होता है।

बाह्यता दो प्रकार की होती है : नकारात्मक बाह्यता तब होती है जब एक क्रिया असंबद्ध व्यक्ति के लिए लागत (अहित, क्षति या असुविधा) उत्पन्न करती है। नकारात्मक बाह्यताओं के उदाहरण हैं – कारों तथा कारखानों (फैक्ट्री) द्वारा उत्सर्जित वायु प्रदूषण जो लोगों के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। जब कोई कार भीड़ भरे रास्ते में प्रवेश करती है, वह अन्य वाहन चालकों पर समय लागत आरोपित करती है, इसके परिणामस्वरूप सभी कारें धीमी गति से चलने लगती है। नकारात्मक बाह्यता का एक अन्य उदाहरण है जब एक इस्पात संयंत्र अपने अवशेष (अपशिष्ट) को नदी में डालता है जिसमें मछुआरे हर रोज मछली पकड़ते हैं। इस्पात संयंत्र जितना अधिक अपशिष्ट नदी में डालता है उतनी कम नदी में मछलियाँ होंगी और उतना ही कम मछुआरों का उत्पाद होगा। इस उदाहरण में देखा जा सकता है कि इस्पात संयंत्र की स्वतंत्र क्रिया, मछुआरों की लागत को बढ़ा देती है तथा उनके उत्पादन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है। अतः नकारात्मक बाह्यता की उपस्थिति, अतिरिक्त लागतों के बोझ को बढ़ाती है, जिसका अहसास उस अभिकर्ता को कभी नहीं होता जो इनका कारण होता है। इसके परिणामस्वरूप, नकारात्मक बाह्यता की उपस्थिति में उन आर्थिक प्रभावों की उत्पत्ति होती है जो अन्यथा नहीं होते।

एक सकारात्मक बाह्यता तब घटित होती है जब एक क्रिया असंबद्ध व्यक्ति के लिए फायदा (हित या सुविधा) उत्पन्न करती है। सकारात्मक बाह्यताओं के उदाहरणों में शामिल है; एक व्यक्ति संक्रामक बीमारियों से बचाव के लिए टीका लगवाकर अन्य व्यक्तियों को वह बीमारी होने की जोखिम घटा देता है। व्यक्ति अपनी सम्पत्ति को बेहतर बनाकर अपने पड़ोसियों का फायदा करता है, इससे एक अधिक सुखदायक पड़ोस का निर्माण होता है तथा सम्पत्ति के मूल्य में भी वृद्धि होती है। सकारात्मक बाह्यता की उपस्थिति में, उस क्रिया को करने वाला अभिकर्ता, उस क्रिया से उत्पन्न होने के अतिरिक्त फायदों को पहचान नहीं पाता है, अतः उन्हें कम उत्पन्न करता है। इसलिए, हम कह सकते है कि उन वस्तुओं या क्रियाओं का उत्पादन, जिनमें किसी प्रकार की बाह्यता का उत्पन्न होना शामिल होता है, जहां तक निजी बाज़ार में लेन-देन का संबंध है। उनका उत्पादन अनुकूलतम (इष्टतम) स्तर पर नहीं होता है, निजी बाज़ार के लेन-देन, नकारात्मक बाह्यताओं वाली वस्तुओं/क्रियाओं के अधिक उत्पादन तथा सकारात्मक बाह्यताओं वाली वस्तुओं/क्रियाओं के अल्प उत्पादन की ओर ले जाते हैं।

7.2.1 नकारात्मक बाह्यताएँ तथा दक्षता हीनताएं

बाह्यताओं की उपस्थिति, बाज़ार कीमत में प्रतिबिंबित नहीं होती है, इसलिए यह बाज़ार अकुशलता का एक कारण हो सकती है। जब फर्में नकारात्मक बाह्यताओं से जुड़ी हानियों (क्षतियों) को ध्यान में नहीं रखती हैं, तो इसके परिणामस्वरूप अधिक उत्पादन हो जाता है तथा अनावश्यक सामाजिक लागतें होती हैं। यह देखने के लिए कि कैसे नकारात्मक बाह्यताएं, बाज़ार उत्पाद को प्रभावित करती हैं, आइये, एक स्टील फर्म तथा मछुआरों के मामले (उदाहरण) पर विचार करें। हम मान लेते हैं कि स्टील फर्म एक प्रतियोगी फर्म है। इस्पात (स्टील) फर्म का उत्पादन निर्णय चित्र 7.1 में दर्शाया गया है।

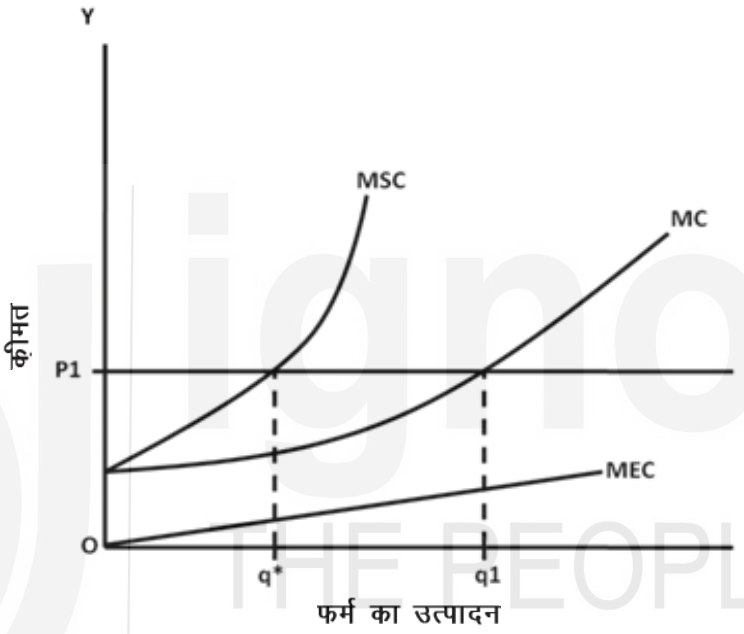

चित्र 7.1

प्रतियोगी (प्रतिस्पर्धी) बाज़ार से हमारा आशय है कि इस्पात (स्टील) फर्म, बाज़ार में दी गई कीमत को ही स्वीकार करती है। यहाँ इस्पात फर्म द्वारा स्वीकार की गई प्रतियोगी (प्रतिस्पर्धी) कीमत P1 है, जो प्रतियोगिता बाज़ार में फर्म की सीमांत आगम वक्र (MR) भी है। यहाँ फर्म का आपूर्ति वक्र, फर्म के सीमांत लागत वक्र (MC) द्वारा दर्शाया गया है। एक फर्म स्टील की वह मात्रा उत्पादित करेगी जहाँ उसकी सीमांत आगम (MR) उसकी सीमांत लागत (MC) के बराबर होती है। ऊपर दिये गए चित्र में, यह q1 मात्रा पर होता है। इस प्रकार, एक प्रतियोगी इस्पात (स्टील) फर्म अपने लाभ को अधिकतम करने के लिए दी गई P1 कीमत पर, q1 मात्रा का उत्पादन करेगी। अब मान लीजिए कि इस्पात संयंत्र, इस्पात उत्पादन की प्रक्रिया में उत्पन्न होने वाले अपशिष्ट (कचरे) को उस नदी में डालता है, जो मछुआरों द्वारा मछली पकड़ने के लिए इस्तेमाल (प्रयोग) की जाती है। इस्पात संयंत्र द्वारा नदी में अपशिष्ट डालने से नदी प्रदूषित हो जाती है। नदी में प्रदूषण का स्तर बढ़ने से मछलियों की संख्या पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस कारण मछुआरों द्वारा पकड़ी जाने वाली मछलियों की संख्या भी घटती है। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि इस्पात के उत्पादन में नकारात्मक बाह्यता शामिल है जो मछुआरों को होने वाली हानि के रूप में समाज के लिए एक अतिरिक्त

लागत है। यह लागत उपरोक्त चित्र 7.1 में सीमांत बाह्य लागत (MEC) के द्वारा दर्शाई गई है।

सीमांत बाह्य लागत (MEC) वक्र ऊपर की ओर उठता है जो फर्म के उत्पादन के साथ धनात्मक संबंध को दर्शाता है। जैसे-जैसे इस्पात का उत्पादन बढ़ता है, समाज को होने वाला नुकसान भी बढ़ता है। सीमांत बाह्य लागत वक्र सीमांत सामाजिक लागत को दर्शाता है। यह समाज के लिए कुल लागत है जो सीमांत लागत (MC) तथा सीमांत बाह्य लागत (MEC) का योग है। इसमें इस्पात फर्म की लागत तथा मछुआरों की लागत शामिल होती है। लाभ को अधिकतम करने के लिए फर्म उस मात्रा का उत्पादन करती है जहाँ सीमांत लागत (MC) तथा सीमांत आगम (MR) बराबर होती है तथा नकारात्मक बाह्यताओं की उपस्थिति के कारण होने वाली समाज की लागत की उपेक्षा करती है। समाज की इष्टतम (अनुकूलतम) स्थिति वहाँ प्राप्त होगी जहाँ सीमांत सामाजिक लागत (MSC), सीमांत आगम के बराबर होती है, वह q* मात्रा पर होगा। यहाँ हम देख सकते हैं कि q* मात्रा, फर्म की इष्टतम मात्रा q1 से कम है।

चित्र 7.2 में, यह दर्शाया गया है कि कैसे बाह्यता की उपस्थिति, इस्पात उद्योग के परिणाम को विकृत कर देती है और सामाजिक हानि की ओर ले जाती है। यह विचार करते हुए कि प्रत्येक इस्पात फर्म समान बाह्यता का सामना करती है, हम कह सकते हैं कि इस्पात उद्योग को भी इसी प्रकार की बाह्यता का सामना करना होगा। इस्पात उद्योग की सीमांत लागत को MC1 द्वारा दर्शाया गया है तथा इस्पात उद्योग के माँग वक्र को DD द्वारा, जो सीमांत संप्राप्ति (MB) को दर्शाता है। इस्पात उद्योग लाभ को अधिकतम करने के लिए स्टील की वह मात्रा उत्पादित करेगा जहाँ सीमांत लागत MC1, सीमांत संप्राप्ति (MB) के बराबर होती है।

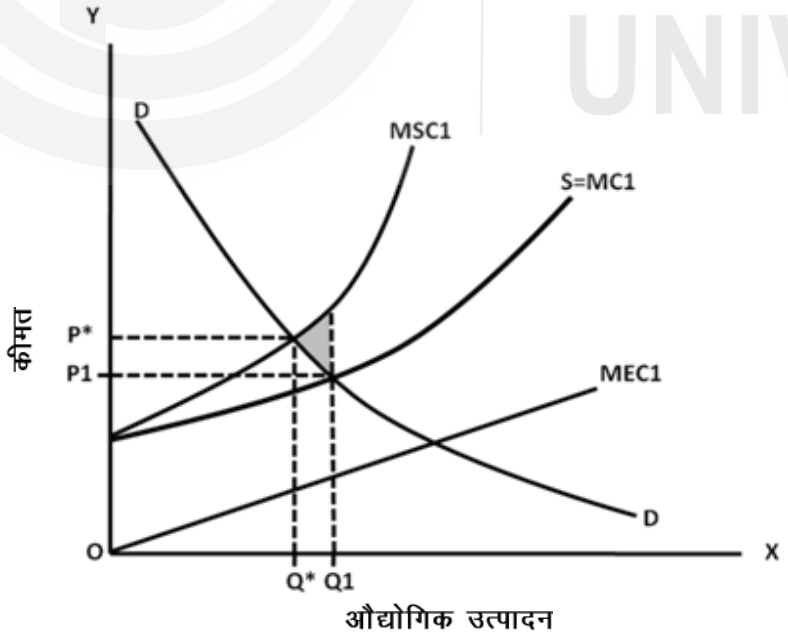

चित्र 7.2

मात्रा Q1 तथा कीमत P1 पर उद्योग का निजी इष्टतम (अनुकूलतम) बिंदु है। इस स्थिति में उद्योग एक बार फिर अपनी उत्पादन लागत में मत्स्य (मछली) उद्योग की

लागत को शामिल नहीं कर पाता है। MEC1 इस्पात उद्योग के उत्पादन की सीमांत बाह्य लागत को दर्शाता है, जो कि इस्पात उद्योग के उत्पादन के बढ़ते उत्पादन से सकारात्मक रूप से संबंधित है। इस्पात उद्योग में सीमांत सामाजिक लागत को MSC1 द्वारा दर्शाया गया है जो सीमांत लागत (MC1) तथा सीमांत बाह्य लागत (MEC1) का कुल योग है (यानि, MSC1 = MC1 + MEC1)। इस्पात उद्योग का सामाजिक इष्टतम (अनुकूलतम) उत्पादन P* कीमत पर Q* मात्रा पर होगा बजाय P1 कीमत पर Q1 मात्रा के जहाँ उद्योग का निजी अनुकूलतम (इष्टतम) बिंदु है। नकारात्मक (ऋणात्मक) बाह्यताओं की उपस्थिति में उद्योग द्वारा अतिरेक (आधिक्य) उत्पादन करने के परिणामस्वरूप समाज में सामाजिक हानि होती है जो चित्र 7.2 में छायांकित त्रिकोणीय क्षेत्र द्वारा दर्शाया गया है। बाह्यताओं की उपस्थिति में बाज़ार विफलता की अवधारणा इस कारण है कि कीमतें, सामाजिक लागतों का मूल्यांकन कम करती हैं। उद्योग का निजी संतुलन P1 कीमत पर होता है जबकि उद्योग का सामाजिक अनुकूलतम (इष्टतम) बिंदु P* कीमत पर है, जहाँ हम देख सकते हैं:

$$P1 < P^*$$

इसलिए, हम देखते हैं कि नकारात्मक बाह्यताओं की उपस्थिति में संतुलन कीमत P1 बहुत कम है, जिसमें इस्पात उत्पादन की सभी लागतों को शामिल नहीं किया जा सकता है। उपरोक्त चित्र 7.2 में कीमत P1 फर्मों की सीमांत लागतों को दर्शाता है। यह समाज की लागतों को शामिल नहीं करता है। बाह्यताओं की उपस्थिति में बाज़ार कीमत इतनी कुशलता से निर्धारित नहीं होती जो सभी लागतों को स्पष्ट कर सके। इसलिए बाह्यताओं की उपस्थिति में बाज़ार विफल रहता है। उपरोक्त चित्र 7.2 में हमने दिखाया है कि किस प्रकार ऋणात्मक बाह्यताओं की उपस्थिति में बाज़ार असफल रहता है। अगले भाग में हम दिखाएंगे कि किस प्रकार सकारात्मक बाह्यताओं की उपस्थिति में बाज़ार असफल रहता है।

7.2.2 सकारात्मक बाह्यताएँ तथा दक्षता हीनताएं

सकारात्मक बाह्यता तब होती है जब एक अभिकर्ता (एजेंट) के स्वतंत्र कार्य से दूसरे अभिकर्ता के उपभोग या उत्पादन को लाभ होता है। यहाँ नकारात्मक (ऋणात्मक) बाह्यता के विपरीत, सकारात्मक बाह्यता की उपस्थिति के कारण वस्तु या सेवा कार्य के उत्पादन में कमी आती है। सकारात्मक बाह्यताओं की स्थिति में बाह्य लाभ की मौजूदगी (विद्यमान) होती है, जिसे एक अभिकर्ता पहचान नहीं पाता है और इस प्रकार वह सकारात्मक बाह्यताओं वाली वस्तुओं तथा सेवाओं (क्रियाओं) की अल्पापूर्ति करता है। इसका उल्लेख, एक अकुशल (अदक्ष) आवंटन के रूप में किया गया है। उदाहरण के लिए, रोग प्रतिरक्षण किसी व्यक्ति को रोगी होने से बचाता है तथा साथ में इसका सकारात्मक प्रभाव यह भी है कि रोग प्रतिरक्षित व्यक्ति अन्य व्यक्तियों में रोग को फैलने से रोकता है। यह समझने के लिए कि सकारात्मक बाह्यताओं की उपस्थिति में बाज़ार कैसे दक्षताहीन हो जाते हैं, हम चित्र 7.3 पर विचार करते हैं।

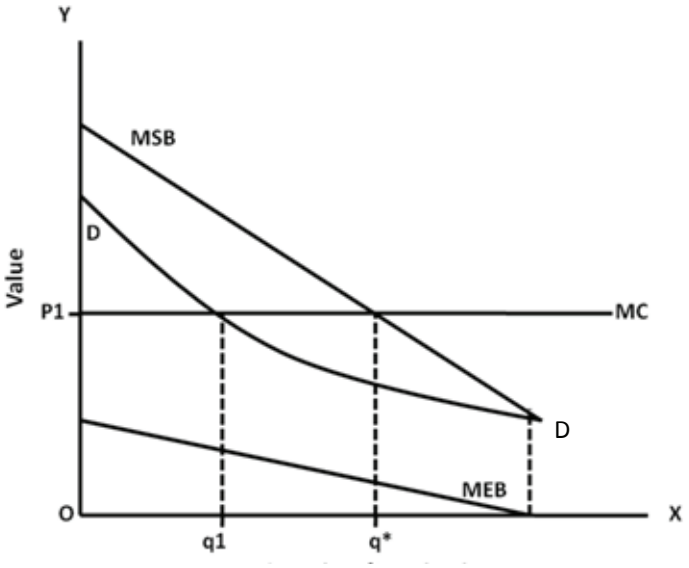

चित्र 7.3

चित्र 7.3 में, संक्रामक रोग से बचाव के लिए टीकाकरण के मामले पर विचार करें। मान लेते हैं कि टीके की सीमांत लागत स्थिर है तथा वह MC के बराबर है। टीके की माँग को नीचे की ओर ढालू DD वक्र द्वारा दर्शाया गया है। यह माँग वक्र एक व्यक्ति के सीमांत लाभ (हित) को दर्शा रहा है। एक व्यक्ति का उपभोग तब इष्टतम (संतुलन) अवस्था में होता है जब निजी सीमांत हितलाभ निजी सीमांत लागत के बराबर होता है (MB = MC)। सीमांत लागत MC को P1 पर समान रखते हुए, निजी इष्टतम (संतुलन) q1 मात्रा पर प्राप्त होता है। अब यह निजी आवंटन, टीके के उस बाह्य लाभ की उपस्थिति की उपेक्षा करता है जो समाज को रोग के कम फैलने के रूप में मिल रहा है तथा जिसे सीमांत बाह्य हितलाभ (MEB) द्वारा दर्शाया गया है। सीमांत सामाजिक हितलाभ (MSB), निजी सीमांत हितलाभ (MB) तथा सीमांत बाह्य हितलाभ (MEB) का कुल योग है (MSB = MB + MEB)। समाज का इष्टतम बिंदु q* मात्रा द्वारा दर्शाया गया है जहाँ सीमांत सामाजिक हितलाभ, निजी सीमांत लागत के बराबर है। चित्र 7.3 में ध्यान दें कि q* > q1 है। इसलिए हम देखते हैं कि सकारात्मक बाह्यता की उपस्थिति में, सामाजिक इष्टतम की तुलना में बाज़ार आवंटन अल्प उत्पादक है और इसलिए बाज़ार आवंटन अकुशल कहलाता है। इसलिए हम देखते हैं कि बाह्यताओं की उपस्थिति में बाज़ार विफल हो जाता है।

बोध प्रश्न 1

1) बाह्यता को परिभाषित करें। कैसे यह बाज़ार को विफलता की ओर ले जाती है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) क्या यह सत्य है कि नकारात्मक बाह्यता की उपस्थिति में निजी आवंटन में अधिआपूर्ति तथा सकारात्मक बाह्यता की उपस्थिति में अल्पापूर्ति होती है? व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7.3 बाज़ार विफलता को सुधारने के तरीके

पिछले भागों में हमने चर्चा की कि बाह्यताओं की उपस्थिति में बाज़ार कैसे विफल होते हैं। इस भाग में हम यह चर्चा करेंगे कि बाह्यता की उपस्थिति में बाज़ार की विफलता को कैसे सुधारा जाये। इसके कुछ उपाय इस प्रकार हैं :

7.3.1 पीगूवादी कर (टैक्स)

नकारात्मक बाह्यता की उपस्थिति में, बाज़ार आवंटन, सामाजिक इष्टतम से ऊपर होता है। नकारात्मक बाह्यता के प्रभाव को रोकने के लिए, बाज़ार आवंटन को सुधारने का एक तरीका, उत्पाद कर लागू करना है। यदि एक फर्म जो सामाजिक रूप से कुशल उत्पादन स्तर से अधिक उत्पाद का उत्पादन करती है तथा साथ में बाह्यता उत्पन्न करती है, तब एक सामाजिक रूप से कुशल उत्पादन स्तर को सुनिश्चित किया जा सकता है जब इस फर्म के उत्पादन स्तर को हतोत्साहित करने के लिए, तब तक बाह्यताओं की लागत को उसकी आंतरिक लागत बना दिया जाता है जब तक कि वह सामाजिक कुशल स्तर पर न पहुँच जाए। यह उत्पादन पर कर लगाकर किया जा सकता है। इस प्रकार के करों को **पीगूवादी कर** कहा जाता है। यह कर लगाते समय एक विशेष प्रकार की समस्या यह आती है कि इष्टतम कर लगाने के लिए, इस्पात उद्योग द्वारा किए जाने वाले प्रदूषण के इष्टतम स्तर की गणना की आवश्यकता होती है।

चित्र 7.4 पर विचार करें। नकारात्मक बाह्यता की उपस्थिति में निजी इष्टतम मात्रा q1 है। जब उत्पादित वस्तु पर प्रति इकाई 't' कर वसूला जाता है, तब कर उत्पादन की लागत को बढ़ाता है। कुशल उत्पाद कर वह है जो लागत को बढ़ाकर सीमांत सामाजिक लागत के बराबर कर देता है। अब, इष्टतम स्तर वहाँ होगा जहाँ सीमांत लागत (MC) तथा कर का योग सीमांत लाभ (MB) के समान होता है। परिणामस्वरूप उत्पाद का q* स्तर, सामाजिक रूप से कुशल होगा। इस प्रकार, नकारात्मक बाह्यता की स्थिति में, उत्पादन पर उत्पाद कर को जोड़कर बाज़ार आवंटन को कुशल बनाया जा सकता है। इस प्रकार की स्थितियों में, सकारात्मक बाह्यता के होने पर, सहाय्य की सलाह दी जाती है।

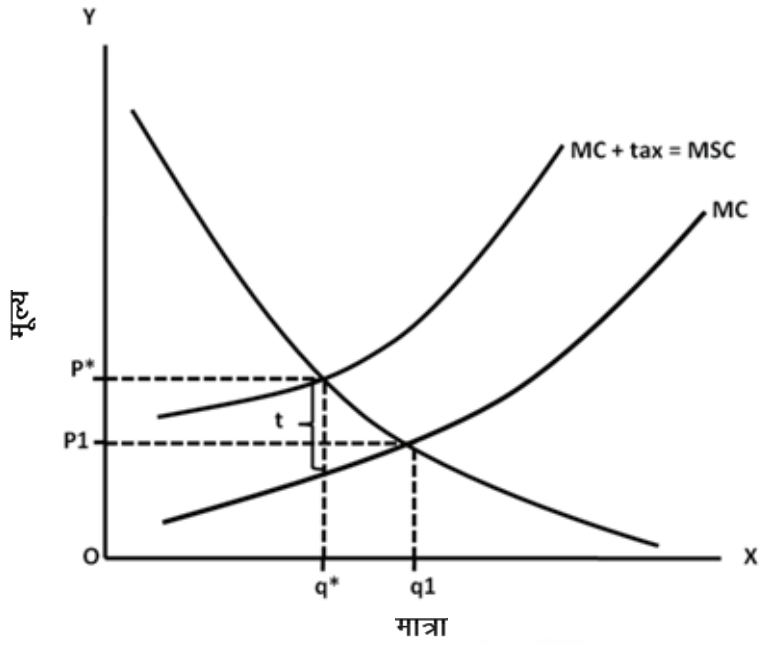

चित्र 7.4

7.3.2 विलयन तथा आंतरीकरण

एक अन्य तरीका है जिससे बाज़ार उत्पाद पर पड़ने वाले बाह्यता के प्रभाव को रोका जा सकता है, जब संबंधित पक्ष मिलकर एक इकाई बन जाते हैं तथा बाह्यता का आंतरीकरण होता है। इस्पात फर्म तथा मछुआरे की स्थिति में, इसका अर्थ है कि दोनों का विलय हो गया है तथा दोनों एक इकाई के रूप में कार्य कर रहे हैं।

इस्पात के उत्पाद में पैदा होने वाला अपशिष्ट नदी में डाल दिया जाता है तथा इससे मत्स्य उद्योग पर बुरा प्रभाव पड़ता है। स्टील के निर्माता समाज की इस लागत को, स्टील उत्पादन की अपनी निजी लागत में अंतर्निहित नहीं करते हैं। इसके परिणामस्वरूप, बाज़ार में उत्पाद सामाजिक इष्टतम मात्रा से अधिक होता है तथा बाज़ार अकुशल होते हैं। स्टील निर्माता को उसके इस कार्य के कारण होने वाली समाज की लागत को अंतर्निहित कराने के लिए, दोनों फर्मों का विलय किया जा सकता है। इस प्रकार बाह्यता को उत्पादन की लागत में अंतर्निहित किया जा सकता है। दोनों फर्मों के विलय के लिए यहां दोनों फर्मों को एक स्पष्ट प्रोत्साहन है। यदि एक के द्वारा किए गए कार्य से दूसरा प्रभावित होता है, तब वह दोनों एक-दूसरे के साथ क्रियाओं का समन्वय करके अपने लाभ को अधिकतम कर सकते हैं जो अकेले उत्पादन करने से अधिक होगा। लाभ को अधिकतम करने का उद्देश्य स्वयं ही उत्पादन की बाह्यताओं को अंतर्निहित करने के लिए प्रेरित करता है। इसलिए, जब संबद्ध पक्षों का विलय होता है, तब कुल सीमांत लागत में मत्स्य उद्योग को पड़ने वाली स्टील उत्पादन की बाह्य लागत भी शामिल होती है। इस प्रकार संविलीत फर्म, निजी लागत की बजाय सामाजिक लागत को ध्यान में रखते हुए इष्टतम मात्रा का उत्पादन करेगी। इसलिए, संविलित फर्मों के साथ बाज़ार आवंटन अधिक कुशल होगा।

7.3.3 उत्सर्जन मानक तथा उत्सर्जन शुल्क

उत्सर्जन मानक, एक फर्म द्वारा उत्सर्जित किए जाने वाले प्रदूषण की एक वैधानिक सीमा है। यदि एक फर्म इस सीमा से अधिक प्रदूषण का उत्सर्जन करती है, तब उसे मौद्रिक दंड तथा आपराधिक दंड का भी सामना करना पड़ता है। चित्र 7.5 पर विचार कीजिए।

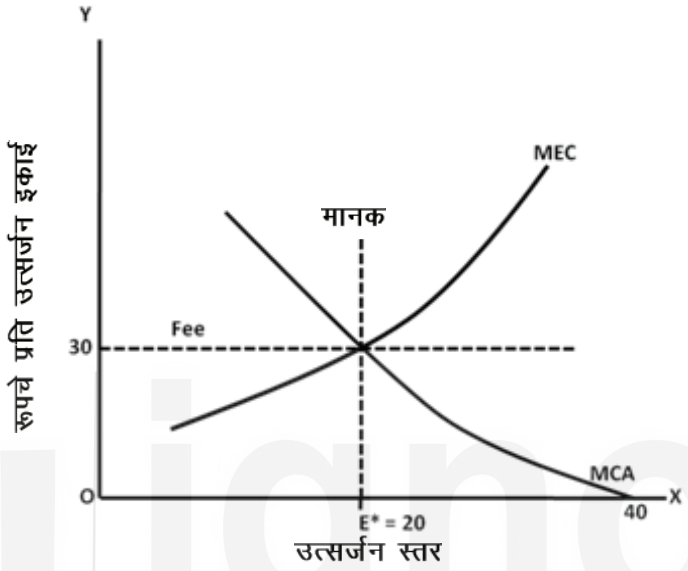

चित्र 7.5

मान लीजिए, नियामक निकाय, कुशल उत्सर्जन मानक को E* (= यहाँ माना गया है) पर निर्धारित करती है। फर्म को इस मानक स्तर से अधिक उत्सर्जन करने पर भारी अर्थदंड का भुगतान करना होगा। अब मान लीजिए कि फर्म इस स्तर से अधिक उत्सर्जन उत्पादित करती है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि फर्म उत्सर्जन मानक का अनुसरण करें, उत्सर्जन शुल्क का निर्धारण किया जाता है। उत्सर्जन शुल्क वह राशि है जो उत्सर्जन करने वाली फर्म द्वारा उत्पादन प्रक्रिया के दौरान होने वाले उत्सर्जन की प्रति इकाई के लिए भुगतान किया जाता है। मानक उत्सर्जन शुल्क का निर्धारण उस बिंदु पर किया जाता है जहाँ उपरोक्त चित्र 7.5 में MEC तथा MCA एक-दूसरे को प्रतिच्छेदित कर रही हैं। यहाँ MEC का अर्थ सीमांत बाह्य लागत है, जो उत्सर्जन के कारण समाज को पड़ने वाली लागत है। MCA, फर्म द्वारा उत्सर्जन को कम करने के लिए वहन की जाने वाली सीमांत लागत है। यह फर्म द्वारा प्रदूषण नियंत्रण करने वाले यंत्रों पर व्यय होने वाली अतिरिक्त लागत का माप है।

MCA नीचे की ओर ढालू है जो यह दर्शाता है कि जब उत्सर्जन को कम करने के प्रयास अधिक हैं या उत्सर्जन का स्तर निम्न है, फर्मों को उत्सर्जन कम करने के लिए उच्च लागत वहन करनी पड़ती है। इसलिए उत्सर्जन के कम स्तर के लिए आवश्यक उत्सर्जन (उपशमन) कम करने के प्रयास अधिक होते हैं, तथा इसके विपरीत भी।

फर्म को कोई उत्सर्जन न्यूनीकरण लागत न होने पर, लाभ अधिकतम करने के लिए फर्म 40 इकाइयों के बराबर उत्सर्जन का उत्पादन करेगी, जहाँ उत्सर्जन न्यूनीकरण (काम करने की) लागत शून्य है। जब E* 20 इकाइयों के बराबर है वहाँ उत्सर्जन

स्तर इष्टतम है, इस स्तर पर न्यूनीकरण लागत तथा उत्सर्जन का सीमांत शुल्क रु. 30/– है। यदि फर्म उत्सर्जन को 20 इकाइयों से कम करती है, तो उत्सर्जन न्यूनीकरण की लागत, समाज को पड़ने वाली लागत से अधिक हो जाती है तथा इसके विपरीत भी। अतः हम देखते हैं कि E* ही इष्टतम उत्सर्जन स्तर है।

किंतु इस उपस्कर के साथ जुड़ी समस्याएँ भी हैं। प्रथमतः तो सरकार या विनियामक अधिकरणों को निर्धारित होने वाले विधिक उत्सर्जन मानकों या इष्ट स्तर तक ही उत्सर्जन बनाए रखने हेतु वसूली जाने वाले उत्सर्जन शुल्क के विषय में पर्याप्त जानकारी नहीं होती। दूसरे, उत्सर्जन सीमाएँ लागू करने की लागतों को अनदेखा कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि उद्योग धुआं छोड़ता है तो उसके उत्सर्जन को घटाने के लिए चिमनी में फिल्टर लगाने पर लागत तो आएगी। इस लागत को भी आंकलन में शामिल किया जाना चाहिए।

7.3.4 विलुप्त बाज़ार

बाह्यताओं के साथ समस्या यह है कि न तो संपदा अधिकार होते हैं और न ही कतिपय पदार्थों के बाज़ार। प्रदूषण को ही लें, इसे उत्पादन प्रक्रिया का ही एक उत्पाद माना जा सकता है, क्योंकि रासायनिक रंजक (रंगने वाली सामग्री) तथा प्रदूषण उत्पादन के ही परिणाम हैं। किंतु प्रदूषक (एक उप-पदार्थ) के लिए न तो कोई बाज़ार होता है और न ही इसकी कोई ज्ञात कीमत होती है। स्पष्टतः यह विलुप्त बाज़ार की समस्या है। फर्में प्रदूषण की आपूर्तिकर्ता हैं। उपभोक्ता संभावी क्रेता हैं किंतु यह एक अपपदार्थ है इसलिए यह समझा जा सकता है कि वे तभी इसकी खरीदारी करेंगे जब उन्हें इसके लिए कुछ भुगतान किया जाए (अपपदार्थ की कीमत तो नकारात्मक ही होगी)।

मान लें कि दो फर्में हैं : 1 और 2। फर्म 1 पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में काम करती है और एक उत्पाद x का उत्पादन करती है जो फर्म 2 पर e(x) लागत थोप देता है। मान लें कि फर्म 1 द्वारा बेचे गए उत्पादन की प्रति इकाई कीमत p है और उसका अपना लागत फलन c(x) है। अतः इन फर्मों के लाभ फलन इस प्रकार होंगे : फर्म 1 : $\pi_1 = px - c(x)$ तथा फर्म 2 : $\pi_2 = -e(x)$।

हम मानते हैं कि $\frac{dc}{dx} > 0, \frac{de}{dx} > 0$। निजी संप्रेरणा आधारित अधिकतम लाभ की शर्त फर्म 1 को अपना उत्पादन इस प्रकार करने की प्रेरणा देगी कि $\frac{d\pi}{dx} = 0 \Rightarrow p = c'(x)$। सामाजिक हितलाभ अधिकतम करने वाला सामाजिक इष्टतम उत्पादन स्तर उस लाभ के आंकलन से प्राक्कलित होगा जिसमें न केवल फर्म 1 की निजी लागतों का हिसाब लगाया जाता है बल्कि उस द्वारा सृजित बाध्य लागतों की भी गणना में शामिल किया जाता है अर्थात् $\pi_S = px - c(x) - e(x)$, जहाँ π_S निजी एवं सामाजिक लागतों का हिसाब लगाने के बाद प्राप्त लाभ है। प्रथम कोटि शर्त हमें देगीः $\frac{d\pi_S}{dx} = 0 \Rightarrow p = c'(x) + e'(x)$, जहाँ दाहिने पक्ष का पद सीमांत सामाजिक लागत है।

मान लें कि अब प्रदूषक तत्वों के लिए एक बाज़ार गठित हो गया है। यदि हम प्रदूषण की इकाई कीमत τ तय कर लेते हैं। प्रदूषण की x_1 मात्रा फर्म 1 बेचना चाहती है तथा फर्म 2 इसकी x_2 मात्रा की खरीदारी करना चाहती है। अब दोनों फर्मों के लाभ इस प्रकार होंगे :

$$\text{फर्म 1: } \pi_1 = px_1 + \tau x_1 - c(x_1) \quad \text{और फर्म 2 : } \pi_2 = \tau x_2 - e(x_2)$$

प्रथम कोटि की शर्तें होंगी : $p + \tau - c'(x) = 0$ और $\tau - e'(x_2) = 0$ । जहाँ प्रदूषण की मांग इसकी आपूर्ति के समान हो, अर्थात् $x_1 = x_2 = x$ वहाँ हमें पुनः सामाजिक इष्टता की शर्त : $p = c'(x) + e'(x)$ मिल जाएगी।

$e'(x) > 0$ और $\tau < 0$ प्रदूषण की कीमत ऋणात्मक है। यही नहीं, प्रदूषण बाज़ार के अस्तित्व के लिए प्रदूषण पर संपदा अधिकार का होना भी आवश्यक है। या तो प्रदूषक फर्म को इसे फैलाने का अधिकार होना चाहिए या फिर प्रदूषण भोगी फर्म (फर्म 2) को स्वच्छ वायु/जल का अधिकार होना चाहिए। यही नहीं कुछ प्रदूषक तत्वों के बाज़ार तो बहुत ही झीने होते हैं, अर्थात् उनमें काम करने वाली इकाइयों की संख्या बहुत ही कम होती है।

7.3.5 निजी सौदेबाजी तथा बातचीत : कोज़ (Coase) प्रमेय

हमने देखा है कि कैसे सरकारी अधिनियम (कर, मानक आदि) बाह्यताओं के कारण उत्पन्न होने वाली अक्षमताओं से निपट सकते हैं। ये अधिकतम फर्मों के प्रोत्साहन में परिवर्तन करते हैं, उनको बाह्यता के कारण उत्पन्न होने वाली बाह्य लागत ध्यान में रखने को मज़बूर करते हैं। यह बाह्यताओं की समस्या से निपटने का एकमात्र उपाय नहीं है। बाह्यता की समस्या को हल करने का दूसरा उपाय संपत्ति के अधिकारों को परिभाषित करना है। संपत्ति अधिकार का अर्थ उन कानूनी नियमों से है जो बताते हैं कि कैसे एक आर्थिक संसाधन का उपयोग तथा स्वामित्व किया जाता है। मत्स्य पालक तथा इस्पात उद्योग के उदाहरण में, यदि मत्स्य पालन को नदी पर संपत्ति अधिकार प्राप्त है तो वह इस्पात फर्म को अपनी संपत्ति में अपशिष्ट डालने के लिए कानूनी रूप से दंडित कर सकती है। दूसरी ओर यदि नदी पर संपत्ति अधिकार इस्पात फर्म के पास है तो वह मत्स्य पालन पर प्रदूषण कम करने का कार्य न करने का आरोप लगा सकती थी। कोज़ (Coase) प्रमेय के अनुसार, स्पष्ट रूप से परिभाषित संपत्ति अधिकारों तथा लागत रहित सौदेबाजी की उपस्थिति में, बाह्यता उत्पन्न करने वाले पक्ष तथा बाह्यता से प्रभावित पक्ष के बीच बातचीत के परिणामस्वरूप सामाजिक रूप से इष्टतम परिणाम प्राप्त हो सकता है।

इसके अलावा, यह समाधान सभी अवस्थाओं में काम करता है, भले ही संपत्ति का अधिकार किसी भी पक्ष के पास है। नीचे एक उदाहरण पर चर्चा की गई है जो यह स्पष्ट करता है कि कैसे स्पष्ट रूप से परिभाषित संपत्ति अधिकारों की उपस्थिति में, निजी उद्यमी आपस में मोल भाव करके एक परस्पर लाभकारी परिणाम पर पहुँच सकते हैं जहाँ उत्पादन कुशल है, वह भी बिना इस तथ्य पर ध्यान दिए कि प्रारंभ में संपत्ति अधिकारों को किस प्रकार परिभाषित किया गया था।

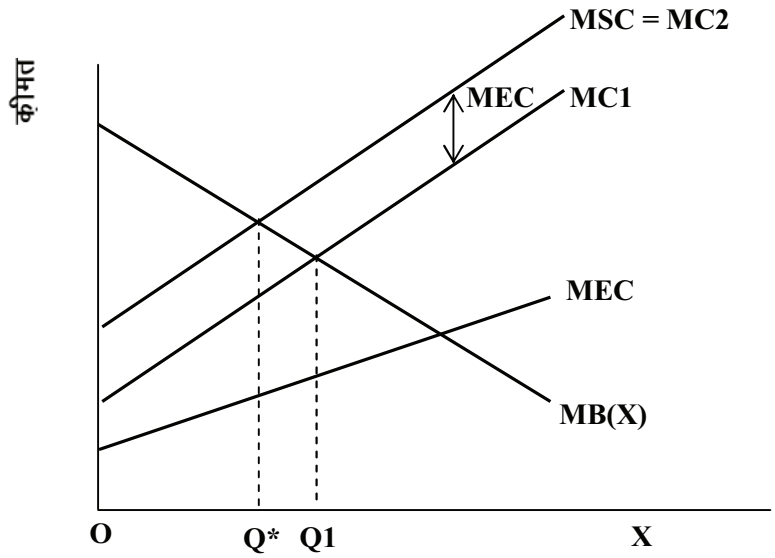

चित्र 7.6

आइए, इस्पात उद्योग तथा मत्स्य पालन के मामले में शामिल नकारात्मक बाह्यता के उदाहरण पर विचार करें। इस्पात के उत्पादन के साथ, इस्पात उद्योग इस्पात उत्पादन की प्रक्रिया में उत्पन्न अपशिष्ट को नदी में डालता है जो मत्स्य उद्योग को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। मान लें X स्टील उत्पादन के स्तर को दर्शाता है, MB(X) इस्पात की X इकाइयों के उत्पादन के परिणामस्वरूप उद्योग को होने वाले सीमांत हितलाभ को दर्शाता है। MC1 सीमांत लागत या इस्पात उद्योग का आपूर्ति वक्र है, MEC(X) इस्पात उद्योग द्वारा नदी में डाले गए अपशिष्ट से मत्स्य उद्योग को होने वाले नुकसान को दर्शाता है, तथा MSC सीमांत लागत MC तथा सीमांत बाह्य लागत (MEC) को जोड़कर प्राप्त होने वाली सीमांत सामाजिक लागत को प्रदर्शित करती है। इसमें इस्पात उद्योग तथा मत्स्य पालन उद्योग की लागत शामिल है। लाभ अधिकतम करने के लिए इस्पात उद्योग, सीमांत लागत (MC) तथा सीमांत हितलाभ (MB) को बराबर करेगा तथा समाज की लागत को नज़रअंदाज करते हुए Q1 मात्रा का उत्पादन करेगा। दूसरी ओर, समाज के लिए इष्टतम तब प्राप्त होगा जहाँ MSC, MB के समान होगी, वह Q* पर होगा जो (< Q1) से कम है।

अब हम मान लेते हैं कि जिस नदी को पहले मुक्त संसाधन माना गया था, वह मत्स्य उद्योग के स्वामित्व में है। अब मत्स्य उद्योग नदी को प्रदूषित करने के लिए इस्पात उद्योग पर प्रभार लगा सकता है। इस्पात के इष्टतम उत्पादन को सुनिश्चित करने के लिए, मत्स्य उद्योग, इस्पात उद्योग से प्रति इकाई उत्पाद के लिए सीमांत बाह्य लागत का प्रभार वसूलेगा। इससे इस्पात उद्योग की सीमांत लागत MC1 से बढ़कर MC2 हो जाएगी जो सीमांत सामाजिक लागत के समान होगी। इससे स्टील का उत्पादन Q1 से घटकर Q* हो जाएगा जो उत्पादन का सामाजिक इष्टतम स्तर है। दूसरी ओर, यदि इस्पात उद्योग के पास नदी का स्वामित्व है, तो वह मत्स्य उद्योग पर कम अपशिष्ट डालने के लिए उत्पाद की प्रति इकाई सीमांत बाह्य लागत का प्रभार लगा सकता है।

दोनों ही स्थितियों में इस्पात उद्योग का सामाजिक रूप से इष्टतम उत्पाद समान होगा। इस प्रकार, नकारात्मक बाह्यता से जुड़ी हुई अक्षमता का ध्यान सरकारी हस्तक्षेप के बिना भी रखा जा सकता है जब बाह्यता से प्रभावित होने वाले पक्ष कम हैं तथा संपत्ति के अधिकार स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट हैं। पक्षकार एक-दूसरे के साथ, बिना किसी लागत के और अपने परस्पर लाभ के लिए सौदेबाजी कर सकते हैं तथा इसके परिणामस्वरूप, (उत्पाद) परिणाम अधिक दक्ष होगा, इस बात की परवाह किए बिना कि संपत्ति अधिकारों को कैसे परिभाषित किया गया है।

निजी संपत्ति इस प्रकार की क्रियाविधि प्रदान करती है। वास्तव में, हमने देखा है कि यदि वह सब जिसकी लोग परवाह करते हैं, किसी ऐसे व्यक्ति के स्वामित्व में है जो इसके उपयोग को नियंत्रित कर सकता है तथा, विशेष रूप से, अन्य लोगों को इसके अति उपयोग से वंचित कर सकता है, तब परिभाषा के अनुसार वहाँ कोई बाह्यता नहीं होगी। बाज़ार संतुलन तब पैरेटो कुशल परिणाम की ओर जाता है। अकुशलताएँ केवल उन परिस्थितियों में उत्पन्न होती हैं जहाँ अन्य लोगों को किसी वस्तु के उपयोग से वंचित करने का कोई रास्ता नहीं होता। बेशक, निजी संपत्ति की ऐसी सामाजिक संस्था नहीं है जो संसाधनों के कुशल प्रयोग को प्रोत्साहित कर सकती है। उदाहरण के लिए, इस विषय में नियम बनाए जा सकते हैं कि नदी में कितना अपशिष्ट (कूड़ा) डाला जा सकता है। यदि इन नियमों को लागू करने के लिए कोई कानूनी प्रणाली बनाई जा सकती है, तो यह साझा (सामान्य) संसाधनों के कुशल उपयोग की लागत प्रभावी समाधान हो सकता है। परंतु जब कानून अस्पष्ट है अथवा अस्तित्व में नहीं है, तब उप-इष्टतम समाधान सरलता से उत्पन्न हो सकता है। अंतर्राष्ट्रीय जल सीमा में अधिक मछली पकड़ना तथा जानवरों का अधिक शिकार करने के कारण अनेक प्रजातियाँ विलुप्त होना इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

बोध प्रश्न 2

1) नकारात्मक बाह्यता की उपस्थिति में होने वाली बाज़ार असफलता को सुधारने के विभिन्न तरीके क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) बाह्यता की उपस्थिति में कैसे निजी सौदेबाजी से कुशल आवंटन हो सकता है?

.....

.....

.....

.....

7.4 सार्वजनिक वस्तुएँ

परिभाषा के अनुसार, निजी वस्तुओं के विपरीत शुद्ध सार्वजनिक वस्तुएँ वे होती हैं जिनके प्रयोग के लिए प्रतिस्पर्धा नहीं होती तथा इनके लाभ से किसी को वंचित करना संभव नहीं होता है। इन वस्तुओं को निजी बाज़ारों में इष्टतम रूप से उपलब्ध नहीं कराया जाता है। इन वस्तुओं की कुछ विशेषताएँ होती हैं जो इनके इष्टतम प्रावधान को निजी फर्मों के अलाभकारी बनाता है। ये विशेषताएँ हैं – प्रतिद्वंद्विता (प्रतिस्पर्धा) का न होना (गैर-प्रतिद्वंद्विता) तथा किसी को वंचित न कर पाना (गैर-अपवर्जकता)।

गैर-अपवर्जकता (Non-excludability) का अर्थ है, सार्वजनिक वस्तु को उपलब्ध कराने के पश्चात् किसी भी अभिकर्त्ता को इसके उपभोग से वंचित नहीं किया जा सकता है। इसके परिणामस्वरूप, इस गैर-अपवर्जक वस्तु के उपयोग के लिए लोगों से शुल्क लेना कठिन या असंभव है। इन वस्तुओं का आनंद बिना सीधे भुगतान के लिया जा सकता है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण राष्ट्रीय सुरक्षा हो सकता है। जब एक राष्ट्र, अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा उपलब्ध कराता है, इसके लाभ का आनंद सभी नागरिक लेते हैं। एक प्रकाश स्तंभ और सार्वजनिक दूरदर्शन (टेलीविज़न) भी उन वस्तुओं और सेवाओं के उदाहरण है 'जिनमें गैर-अपवर्जकता की विशेषता होती है। यह लक्षण निजी वस्तुओं के विपरीत होता है जो अपवर्जक होती है जिसका अर्थ है कि विक्रेता एक क्रेता को निजी वस्तु के उपभोग से वंचित कर सकता है। यह वस्तु की कीमत निर्धारण के द्वारा किया जाता है (उन्हें, जो कीमत का भुगतान नहीं करेंगे, वस्तु नहीं मिलेगी)।

गैर-प्रतिद्वंद्विता का अर्थ है, एक अभिकर्त्ता द्वारा सार्वजनिक वस्तु का उपभोग, अन्य व्यक्तियों के लिए उसकी उपलब्धता को कम नहीं करता है। तद्नुसार, उत्पादन के किसी भी स्तर पर, एक अतिरिक्त उपभोक्ता को वह वस्तु उपलब्ध कराने की सीमांत लागत शून्य होती है। उदाहरण के लिए, राजमार्ग (हाईवे) के उपयोग पर विचार करें (जिस पर भीड़भाड़ न हो)। एक बार जब राजमार्ग तैयार हो जाता है तब जनता के उपयोग के लिए खोल दिया जाता है। यदि उस पर 100 कारें चल रही हैं, राजमार्ग को 101वीं कार के लिए उपलब्ध कराने में कोई अतिरिक्त लागत नहीं आती है। अतः खुला राजमार्ग एक गैर-प्रतिद्वंद्विता वस्तु है। अधिकतर वस्तुएँ प्रतिद्वंद्वी होती हैं, खासतौर पर निजी वस्तुएँ। इसका अर्थ है कि यदि एक विक्रेता बाज़ार में बेचने के लिए वस्तु की 100 इकाइयाँ लाता है और यदि एक व्यक्ति 5 इकाइयाँ क्रय करता है, तब अन्य व्यक्तियों के लिए उस वस्तु की 95 इकाइयाँ क्रय करने के लिए उपलब्ध होंगी। यह इसलिए होता है क्योंकि निजी वस्तु की प्रत्येक इकाई के उत्पादन के साथ सीमांत लागत जुड़ी होती है और इसी कारण से उनका सीमित उत्पादन होता है। जिस वस्तु का उपभोग प्रतिद्वंद्वी होता है, उसका उपभोक्ताओं में आवंटन करना आवश्यक होता है। उपभोग में गैर-प्रतिद्वंद्वी वस्तु बिना किसी अन्य व्यक्ति के उपभोग के अवसर को कम किए सभी को उपलब्ध कराई जा सकती है।

विभिन्न प्रकार की वस्तुओं में विभिन्न विशेषताएँ होती हैं। मोटे तौर पर वस्तुओं की 4 विशेषताएँ होती हैं।

	प्रतिद्वंद्वी	गैर-प्रतिद्वंद्वी
अपवर्जक	शुद्ध निजी वस्तुएँ	क्लब वस्तुएँ
गैर-अपवर्जक	सामान्य संसाधन वस्तुएँ	शुद्ध सार्वजनिक वस्तुएँ

वस्तुएँ जो गैर-अपवर्जक तथा गैर-प्रतिद्वंद्वी होती है वे शुद्ध सार्वजनिक वस्तुएँ होती हैं, जैसे, राष्ट्रीय सुरक्षा। वे वस्तुएँ जो प्रतिद्वंद्वी तथा अपवर्जक होती हैं, शुद्ध निजी वस्तुएँ होती हैं।

वे वस्तुएँ जो प्रतिद्वंद्वी हैं किंतु गैर-अपवर्जक होती हैं, उन्हें सामान्य संसाधन वस्तुएँ कहा जाता है, जैसे भूजल, चरागाह, मछली पकड़ने का क्षेत्र। यह गैर-अपवर्जक होते हैं क्योंकि इस प्रकार के संसाधनों पर किसी का संपत्ति अधिकार स्थापित नहीं होता है जिससे वह किसी को इसके उपयोग से वंचित कर सके। इनकी प्रतिद्वंद्वी प्रकृति इस तथ्य के कारण होती है कि जानवरों के एक झुण्ड द्वारा अधिक चराई के कारण चरागाह की भूमि का अपरदन (क्षरण) होता है और इस कारण से अन्य पशु चरवाहों द्वारा इसका उपयोग सीमित रह जाता है। वे वस्तुएँ जो उपभोग में गैर-प्रतिद्वंद्वी होती हैं किंतु अपवर्जक होती हैं उन्हें क्लब वस्तुएँ कहते हैं। क्लब वस्तुएँ, क्लब की सदस्यता की तरह होती हैं। क्लब की सदस्यता गैर-प्रतिद्वंद्वी होती है, क्योंकि क्लब की सुविधाएँ सभी के लिए खुली हैं, किंतु क्लब में प्रवेश, सदस्यता शुल्क लगाने के कारण अपवर्जक हो जाता है। केवल क्लब के सदस्यों को ही विशेष कार्यक्रमों/ प्रदर्शनों का आनंद लेने (उपयोग करने) की अनुमति होती है।

सार्वजनिक वस्तुएँ ज़रूरी नहीं राष्ट्रीय हों : सार्वजनिक वस्तुओं की सूची सरकार द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली वस्तुओं की सूची से काफी छोटी होती है। उदाहरण के लिए, शिक्षा उपभोग के दौरान प्रतिद्वंद्वी होती है। यह इस तथ्य के कारण होता है कि जैसे-जैसे कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती है, प्रत्येक विद्यार्थी पर दिया जाने वाला ध्यान कम होता जाता है। इसलिए एक अतिरिक्त बालक को शिक्षा उपलब्ध कराने की सीमांत लागत धनात्मक होती है। इसी प्रकार, शिक्षा शुल्क लगाने से भी कुछ बालक शिक्षा प्राप्त करने से वंचित हो सकते हैं। इस कारण से, शिक्षा स्थानीय सरकार द्वारा उपलबध कराई जाती है क्योंकि यह धनात्मक बाह्यता के लिए आवश्यक है, न कि इसलिए कि यह एक सार्वजनिक वस्तु है।

7.5 सार्वजनिक वस्तुएँ तथा बाज़ार विफलता

प्रत्येक सार्वजनिक वस्तु की इष्टतम मात्रा का उत्पादन करने के लिए, सरकार को कुछ ऐसी जानकारी होना ज़रूरी है जिसका सहज ही पता करना संभव नहीं है – प्रत्येक की प्राथमिकताएँ। क्योंकि अपवर्जकता संभव नहीं है, परिवारों को कोई अपनी प्राथमिकताओं (अधिमान) प्रकट करने के लिए बाध्य नहीं करता है। इसके अतिरिक्त, यदि हम परिवारों से सीधे उनकी भुगतान करने की तत्परता के विषय में पूछेंगे, तो उनका सही मूल्य प्रकट नहीं होगा। यदि आपका वास्तविक भुगतान आपके उत्तर पर निर्भर होता है, तब आपके पास अपनी वास्तविक भावनाओं को छिपाने का प्रलोभन होगा। यह जानते हुए कि आपको उस वस्तु के लाभों का आनंद लेने के लिए वंचित नहीं किया जा सकता तथा आपके द्वारा किए गए भुगतान का अंतिम उत्पादित

उत्पादन के स्तर पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा, आपके पास सत्य बताने की या योगदान करने की क्या प्रेरणा है?

समाज यह कैसे निर्णय करता है कि कौन-सी सार्वजनिक वस्तुएँ उपलब्ध करानी हैं? हम मान लेते हैं कि समाज के सदस्य कुछ निश्चित सार्वजनिक वस्तुएँ चाहते हैं। बाज़ार में निजी उत्पादक इस प्रकार की वस्तुओं के उत्पादन में लाभ नहीं कमा सकते तथा सरकार समाज की माँग को सही प्रकार मापने के लिए पर्याप्त सूचना प्राप्त नहीं कर सकती है।

7.5.1 मुफ्तख़ोरी (राइडर) की समस्या

सार्वजनिक वस्तु की व्यवस्था को अक्सर मुफ्तख़ोरी की समस्या का सामना करना पड़ता है। यह समस्या, गैर-अपवर्जक वस्तुओं की स्थिति में उत्पन्न होती है क्योंकि सार्वजनिक वस्तुओं का प्रावधान वहाँ होता है जहाँ वस्तु से मिलने वाले सीमांत लाभों का योग, वस्तु को उपलब्ध कराने की सीमांत लागत के बराबर होता है, व्यक्तियों में निःशुल्क लाभ उठाने की प्रवृत्ति होती है, इसलिए वे सार्वजनिक वस्तुओं का उपयोग, उस वस्तु के लिए भुगतान किए बिना करने को प्रवृत्त होते हैं। इसके अलावा, क्योंकि व्यक्तियों को उनके सीमांत लाभ के अनुसार भुगतान करना होता है, वे अपने सीमांत लाभ का कम मूल्यांकन करते हैं ताकि उन्हें कम मूल्य का भुगतान करना पड़े। क्योंकि यह एक सामूहिक वस्तु होती है, एक व्यक्ति अक्सर यह मानता है कि कोई और इसके लिए भुगतान कर देगा। सार्वजनिक वस्तु की व्यवस्था का बाज़ार विफल हो जाता है, यदि इसका निःशुल्क लाभ उठाने प्रवृत्त लोग अपने सीमांत लाभ का उस स्तर तक कम मूल्य आंकते हैं जहाँ सीमांत लाभों का योग, उस वस्तु को उपलब्ध कराने की सीमांत लागत से भी कम होता है और इसलिए कोई सार्वजनिक वस्तु उपलब्ध ही नहीं कराई जा पाएगी। सार्वजनिक वस्तु की व्यवस्था में सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक निःशुल्क लाभ लेना है। व्यक्तियों के लिए सार्वजनिक वस्तु के सही मूल्यांकन को आंकना बहुत कठिन होता है।

मुफ्तख़ोरी की समस्या बंदी की दुविधा के सदृश्य-सी है– किंतु दोनों पूर्ण रूप से समान नहीं होतीं। मान लें कि एक मकान में दो किरायेदार हैं जो यह निर्णय करना चाहते हैं कि मुख्य द्वार पर एक संकोचनशील द्वार पट्ट लगाया जाए या नहीं। यदि वह द्वार पट्ट लगाया जाता है तो दोनों को समान रूप से सुरक्षा प्राप्त होगी। हम इसे एक सार्वजनिक पदार्थ की भाँति मान सकते हैं। मान लें दोनों व्यक्ति रु. 5000 प्रत्येक कमाते हैं और वे दोनों ही इस द्वार पट्ट का मूल्यांकन रु. 1000 (प्रत्येक) करते हैं। किंतु द्वारा पट्ट की लागत रु. 1500 है। अतः दोनों का संयुक्त मूल्यांकन (रु. 1000 + रु. 1000) लागत से अधिक है। लगने के बाद इस पट्ट से दोनों को लाभ होगा। अब प्रश्न है कि क्या यह द्वारा पट्ट लगावाया जाए या नहीं।

		किरायेदार 2	
		खरीदो	**नहीं खरीदो**
किरायेदार 1	**खरीदो**	(–500, –500)	(–500, 1000)
	नहीं खरीदो	(1000, –500)	(0, 0)

यहाँ 'नहीं खरीदो' युक्ति ही प्रबल युक्ति है (दोनों के लिए)। अतः प्रबल युक्ति संतुलन या नैश संतुलन दोनों के लिए ही मुफ्तखोरी (नहीं खरीदो, नहीं खरीदो) है। इससे सार्वजनिक पदार्थ के लिए प्रावधान अपर्याप्त रह जाता है। यदि किरायेदार 1 द्वार पट्ट खरीद लाता है तो दूसरे को मुफ्त में उसका लाभ (बेहतर सुरक्षा) मिल जाएगा। इसके विपरीत भी सत्य होगा। अतः दोनों को ही यह निश्चित आशंका है कि दूसरा उसके खरीदारी के फैसले पर मुफ्तख़ोरी अवश्य करेगा, परिणामतः परस्पर मुफ्तख़ोरी ही संतुलन के रूप में उभर कर आएगी। किंतु यहाँ सामाजिक दृष्टि से इष्टतम तो यही समाधान है कि एक व्यक्ति उस द्वारा पट्ट को खरीदने की जिम्मेदारी उठाए, भले ही दूसरे को भी बेहतर सुरक्षा प्राप्त हो।

7.6 सार्वजनिक वस्तुओं की इष्टतम व्यवस्था

अब हम सार्वजनिक वस्तुओं की व्यवस्था के दो समाधानों की चर्चा करेंगे :

अ) जब उपभोक्ताओं के सीमांत लाभ ज्ञात हों जिसे सैम्युल्सन-मुस्ग्रैव सिद्धांत द्वारा दिया गया है।

ब) जब उपभोक्ताओं के सीमांत लाभ ज्ञात न हों जैसाकि टाईबाउट मॉडल के अंतर्गत दिया गया है।

7.6.1 सैम्युल्सन-मुस्ग्रैव सिद्धांत

1950 के दशक के शुरू में, अर्थशास्त्री पॉल सैम्युल्सन ने रिचर्ड मुस्ग्रैव द्वारा किए गए कार्य को आगे बढ़ाते हुए प्रदर्शित किया कि सभी सार्वजनिक वस्तुओं के लिए एक इष्टतम या एक सबसे अधिक कुशल उत्पादन स्तर मौजूद है। सैम्युलसन तथा मुस्ग्रैव द्वारा दिए गए समाधान पर आगे चर्चा की गई है जो हमें सीधा उस कठिन समस्या पर ले जाता है कि कैसे समाज, न कि व्यक्ति चयन (चुनाव) करते हैं।

इस सिद्धांत के अनुसार, एक दक्ष अर्थव्यवस्था वह उत्पादन करती है जो लोग चाहते हैं। निजी उत्पादक, चाहे पूर्ण प्रतियोगी हों या एकाधिकार वाले, अपने उत्पाद के लिए बाज़ार माँग द्वारा मज़बूर होते हैं। यदि वे अपने उत्पाद को, उनके उत्पादन की लागत से अधिक में नहीं बेच सकते हैं, तो वे व्यापार से बाहर हो जाएंगें क्योंकि निजी वस्तुएँ अपवर्जन की अनुमति देती हैं, इसलिए फर्में अपने उत्पाद को तब तक रोक सकती हैं जब तक उपभोक्ता उनका उपभोग करने के लिए भुगतान न करें। किसी उत्पाद को, किसी रोपित कीमत पर खरीदने से यह पता चलता है कि यह उत्पाद आपके लिए तथा उसे खरीदने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए कम से कम उतनी राशि के बराबर मूल्य का है।

एक निजी वस्तु के लिए बाज़ार माँग, उन सभी मात्राओं का योग है जो प्रत्येक परिवार, प्रत्येक दी गई कीमत पर क्रय करने का निर्णय लेता है (जैसे कि क्षैतिज अक्ष पर मापा जाता है)। चित्र 7.7 में, बाज़ार माँग वक्र की व्युत्पत्ति को दर्शाया गया है। मान लीजिये कि समाज में दो व्यक्ति है, क और ख हैं। रु. 1 की कीमत पर, 'क' निजी वस्तु की 9 इकाइयों की माँग करता है तथा 'ख' 13 इकाइयों की माँग

करता है। रु. 1 की कीमत पर बाज़ार माँग 22 इकाइयाँ (9+13) हैं। यदि कीमत रु. 3 तक बढ़ जाती है, तो क की माँगी गई मात्रा घटकर 2 इकाइयाँ हो जाती हैं तथा ख की घटकर 9 इकाइयाँ हो जाती हैं। रु. 3 कीमत पर बाज़ार माँग 2 + 9 = 11 इकाइयाँ हैं। मुद्दे की बात यह है कि कीमत प्रणाली लोगों को यह बताने के लिए मज़बूर करती है कि वे क्या चाहते हैं, और यह फर्मों को केवल उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए विवश करती है जिनके लिए लोग भुगतान करने को तैयार हैं, लेकिन यह सिर्फ इसलिए काम करती है क्योंकि अपवर्जन संभव है।

लोगों की सार्वजनिक वस्तुओं की माँग और प्राथमिकताएँ संकल्पनात्मक रूप से उनकी निजी वस्तुओं की माँग और प्राथमिकताओं से भिन्न नहीं हैं। आप आग से सुरक्षा चाह सकते हैं और उसके लिए भुगतान करने को तैयार हो सकते हैं। ठीक उसी तरीके से जैसे आप एक संगीत की सीडी (CD) सुनना चाहते हैं। प्रदर्शन द्वारा स्पष्ट करने के लिए उत्पादन का एक कुशल स्तर होता है। सैम्युल्सन यह मान लेता है कि हम लोगों के अधिमान (प्राथमिकताओं) को जानते हैं।

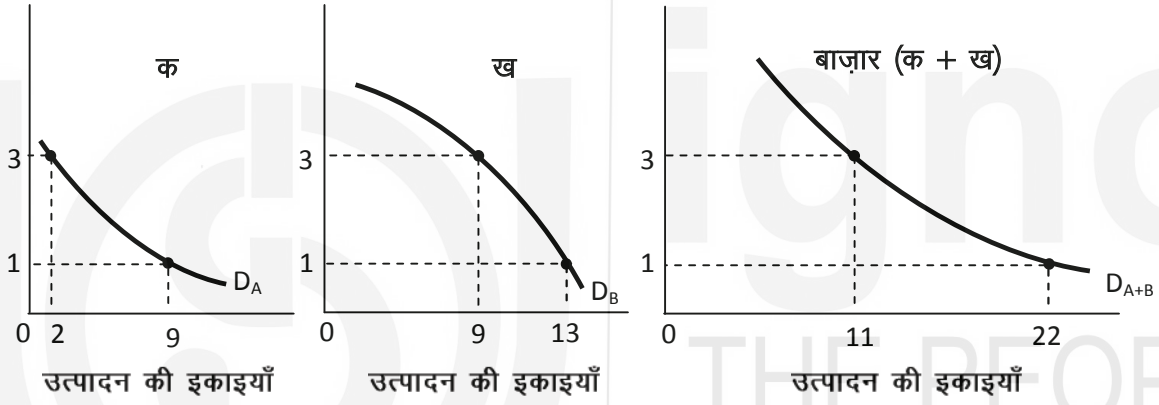

चित्र 7.7

चित्र 7.8 क्रेता 'क' तथा 'ख' के माँग वक्रों को दर्शाता है। यदि सार्वजनिक वस्तु, निजी बाज़ार में रु. 6 कीमत पर उपलब्ध होती है, तो 'क' X1 इकाइयों को क्रय करेगा। इसे दूसरी तरह से देखें तो, सार्वजनिक वस्तु की X1 इकाइयों को प्राप्त करने के लिए 'क' प्रति इकाई रु. 6 का भुगतान करने को तत्पर है। जबकि सार्वजनिक वस्तु की X1 इकाइयों को प्राप्त करने के लिए 'ख' केवल रु. 3 प्रति इकाई भुगतान करने को तैयार है। याद रखें, सार्वजनिक वस्तुएँ, गैर-प्रतिद्वंद्वी तथा गैर-अपवर्जक होती हैं। इसलिए, एक ओर केवल एक ही मात्रा का उत्पादन किया जा सकता है, और यही वह मात्रा है जो हर व्यक्ति को मिलती है। जब X1 इकाइयों का उत्पादन होता है, 'क' को X1 मिलता है और 'ख' को X1 मिलता है। जब X2 इकाइयों का उत्पादन किया जाता है, तब 'क' को X2 मात्रा मिलती है और 'ख' को X2 मिलती है।

सार्वजनिक वस्तुओं के लिए बाज़ार माँग पर पहुँचने के लिए, हम मात्राओं का योग नहीं करते हैं। इसके बजाय, हम उन राशियों का योग करते हैं जो व्यक्तिगत परिवार, उत्पादन के प्रत्येक संभावित स्तर के लिए भुगतान करने को तैयार हैं। चित्र 7.8 में, 'क' X1 इकाइयों के लिए, प्रति इकाई रु. 6 का भुगतान करने का तैयार है और 'ख' X1 इकाइयों के लिए, प्रति इकाई रु. 3 का भुगतान करने को तैयार है। इस प्रकार,

यदि समाज में केवल 'क' तथा 'ख' शामिल हों तो समाज, सार्वजनिक वस्तु X की X1 इकाइयों के लिए प्रति इकाई रु. 9 का भुगतान करने को तैयार है। इसी प्रकार, X2 इकाइयों के उत्पादन के लिए, समाज प्रति इकाई कुल रु. 4 का भुगतान करने को तैयार है।

निजी वस्तुओं के लिए बाज़ार माँग सभी व्यक्तिगत माँग वक्रों का क्षैतिज योग है– हम उन विभिन्न मात्राओं को जोड़ते हैं जो परिवार उपभोग करते हैं (जिसे क्षैतिज अक्ष पर मापा जाता है)। सार्वजनिक वस्तुओं के लिए बाज़ार माँग, सभी व्यक्तिगत माँग वक्रों का लंबवत् (ऊर्ध्वाधर) योग है – हम उन विभिन्न राशियों को जोड़ते हैं जो परिवार, उत्पादन के प्रत्येक स्तर को प्राप्त करने के लिए भुगतान करने को तैयार है (जिसे ऊर्ध्वाधर अक्ष पर मापा जाता है)।

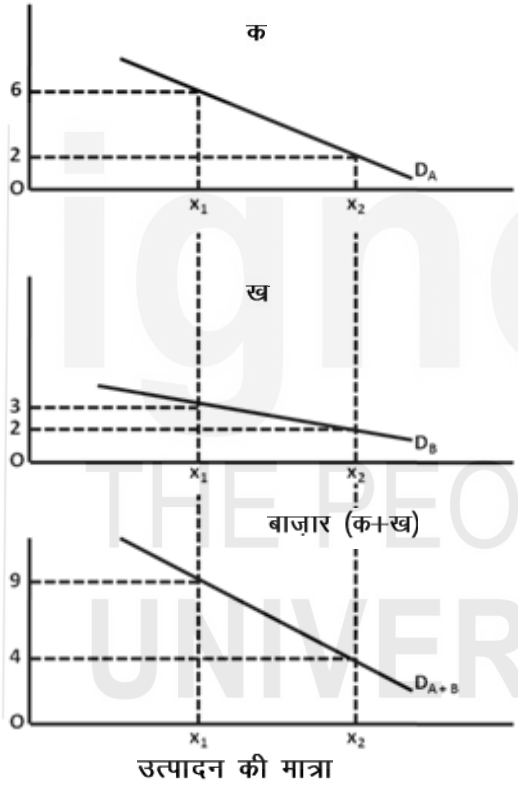

चित्र 7.8

सैम्युलसन ने तर्क दिया कि एक बार जब हम यह जान लेते हैं कि समाज, सार्वजनिक वस्तु के लिए कितनी राशि के भुगतान को तैयार है तो हमें केवल उसकी तुलना उत्पादन की लागत से करनी होगी। चित्र 7.9 में, 'क' का माँग वक्र, 'ख' का माँग वक्र तथा सार्वजनिक वस्तु का बाज़ार माँग वक्र पुनः बनाया गया है। जब तक समाज (इस स्थिति में 'क' और 'ख') उत्पादन की सीमांत लागत से अधिक भुगतान करने को तैयार है, तब तक वस्तु का उत्पादन किया जाना चाहिए।

चित्र 7.9 में दर्शाए गए सीमांत वक्र (MC) को देखते हुए, उत्पादन का कुशल स्तर X1 इकाइयाँ हैं। यदि उस स्तर पर, 'क' से उत्पादित X वस्तु के लिए प्रति इकाई रु. 6 का शुल्क लिया जाता है तथा 'ख' से X का प्रति इकाई रु. 3 शुल्क लिया जाता है, तो सभी को खुश होना चाहिए। अन्य वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन से

केवल उस हद तक संसाधनों को खिंचा जा सकता है जहां तक व्यक्ति, सार्वजनिक वस्तु को चाहते हैं तथा उसके लिए भुगतान करने को तैयार हैं। इस प्रकार, हम सार्वजनिक वस्तुओं की व्यवस्था के इष्टतम स्तर पर पहुँच गए हैं। इष्टतम स्तर पर, समाज की प्रति इकाई भुगतान की इच्छा, उस वस्तु के उत्पादन की सीमांत लागत के बराबर होती है।

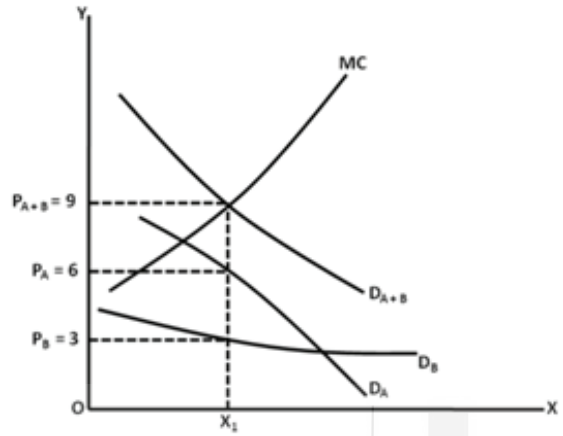

उत्पादन की मात्रा

चित्र 7.9

सार्वजनिक पदार्थों का इष्टतम प्रावधान : एक प्रतिमान

हम यहाँ सार्वजनिक पदार्थ के उस स्तर या परिमाण पर चर्चा कर रहे हैं जिसका उत्पादन या प्रावधान होना चाहिए। एक ऐसी अर्थव्यवस्था की कल्पना करें जिसमें केवल दो पदार्थ उत्पादित होते हैं : एक निजी और एक सार्वजनिक। मान लें कि समाज में दो व्यक्ति हैं– 1 और 2, और उनके प्रारंभिक संपदा स्तर w_1 एवं w_2 हैं। सार्वजनिक पदार्थ हेतु उनके प्रावधान क्रमशः g_1 और g_2 हैं तथा उनके निजी पदार्थ उपभोग क्रमशः x_1 और x_2 हैं। मान लें कि G सकल सार्वजनिक पदार्थ उत्पादन तथा उसके उत्पादन प्रावधान की लागत c(G) है। हमारे इन दो अभिकर्ताओं के समक्ष एक संरोध है : उनका निजी एवं सार्वजनिक पदार्थों पर कुल व्यय उनकी प्रारंभिक संपदा से अधिक नहीं हो सकता :

$$x_1 + x_2 + c(G) = w_1 + w_2$$

हम सार्वजनिक पदार्थ के एक पैरेटो दक्ष प्रावधान पर विचार कर रहे हैं। यह दक्ष होगा यदि अभिकर्ता 2 के उपयोगिता स्तर को स्थिर रखते हुए अभिकर्ता 1 की उपयोगिता को अधिकतम किया जाए। ध्यान रहे कि दोनों ही सार्वजनिक पदार्थ की समान मात्रा का उपयोग करते हैं। इस समस्या का इस प्रकार निरूपण किया जा सकता है :

Max $U_1(x_1, G)$ $w.r.t.$ x_1, x_2, G संरोधाधीन $U_2(x_2, G) = U_2^*$ तथा

$$x_1 + x_2 + c(G) = w_1 + w_2$$

इस समस्या के लिए लैग्रेंजियन फलन होगा :

$$\mathcal{L} = U_1(x_1, G) + \lambda_1\{(U_2^* - U_2(x_2, G)\} + \lambda_2\{w_1 + w_2 - x_1 - x_2 - c(G)\}$$

इष्टता की प्रथम कोटि शर्तें होंगी :

$$\frac{\partial \mathcal{L}}{\partial x_1} = \frac{\partial U_1}{\partial x_1} - \lambda_2 = 0 \quad \text{...(i)}$$

$$\frac{\partial \mathcal{L}}{\partial x_2} = -\lambda_1 \frac{\partial U_2}{\partial x_2} - \lambda_2 = 0 \quad \text{...(ii)}$$

$$\frac{\partial \mathcal{L}}{\partial G} = \frac{\partial U_1}{\partial G} - \lambda_1 \frac{\partial U_2}{\partial G} - \lambda_2 c'(G) = 0 \quad \text{...(iii)}$$

$$\frac{\partial \mathcal{L}}{\partial \lambda_1} = U_2^* - U_2(x_2, G) = 0 \quad \text{... (iv)}$$

$$\frac{\partial \mathcal{L}}{\partial \lambda_2} = w_1 + w_2 - x_1 - x_2 - c(G) = 0 \quad \text{... (v)}$$

हम (i) से पाते हैं $\lambda_2 = \frac{\partial U_1}{\partial x_1}$। फिर (i) तथा (ii) से, λ_2 के विलोपन से हम पा जाते हैं: $\lambda_1 = \frac{\frac{\partial U_1}{\partial x_1}}{\frac{\partial U_2}{\partial x_2}}$। इन मानों को (iii) में रखने पर हम पा लेंगे :

$$\frac{\partial U_1}{\partial G} \Big/ \frac{\partial U_1}{\partial x_1} + \frac{\partial U_2}{\partial G} \Big/ \frac{\partial U_2}{\partial x_2} = c'(G)$$

दूसरे शब्दों में सार्वजनिक पदार्थों के इष्टतम प्रावधान की शर्त को इस प्रकार लिखा जा सकता है :

$$MRS_{GX}^1 + MRS_{GX}^2 = MC_G$$

अर्थात् निजी एवं सार्वजनिक पदार्थों के बीच सीमांत प्रतिस्थापन (MRS) दरों का (दोनों व्यक्तियों हेतु) योगफल सार्वजनिक पदार्थ के प्रावधान की सीमांत लागत के समान होना चाहिये। इस शर्त को 'सैम्युलसन का नियम' कहा जाता है। यदि हम MRS की व्याख्या सीमांत भुगतान तत्परता के रूप में करें तो पैरेटो दक्षता शर्त को दोनों की भुगतान तत्परता के एक अतिरिक्त इकाई सार्वजनिक पदार्थ के प्रावधान की लागत के समान होना माना जा सकता है।

यदि दक्षता की शर्त का उल्लंघन होता है तो हम दिखा सकते हैं कि कम-से-कम व्यक्ति की अवस्था को किसी को भी आघात पहुँचाएं बिना बेहतर बनाया जा सकता है। मान लें कि MRS का योगफल सीमांत लागत से कम है। मान लें $MC_G = 1$, $MRS_{GX}^1 = \frac{1}{2}, MRS_{GX}^2 = \frac{1}{3}$ तो फिर अभिकर्ता 1 निजी पदार्थ के रु. $\frac{1}{2}$ जितने मान के लिए सार्वजनिक पदार्थ के रु. 1 जितना त्याग करने को तैयार होगा। वहीं अभिकर्ता 2 तो इतने ही त्याग के लिए निजी पदार्थ का रु. $\frac{1}{3}$ जितना मान स्वीकार करने को तैयार दिखाई देता है। मान लें कि हम सार्वजनिक पदार्थ का प्रावधान रु. 1 घटा देते हैं, तो फिर हम उन दोनों अभिकर्ताओं को रु. 5/6 जितने निजी पदार्थ देकर क्षतिपूर्ति कर सकते हैं। इसके बाद भी निजी पदार्थ की 1/6 इकाई बची रहेगी

जिसके बंटवारे से उन दोनों को बेहतर बनाया जा सकता है। अतः यदि दोनों व्यक्तियों के निजी एवं सार्वजनिक पदार्थों के MRS का योगफल MC से कम हो तो सार्वजनिक पदार्थ का कम तथा निजी पदार्थ का अधिक प्रावधान किया जाना चाहिए।

7.6.2 सार्वजनिक वस्तुओं के स्थानीय प्रावधान : टाईबाउट प्राक्कल्पना

वर्ष 1956 में, अर्थशास्त्री चार्ल्स टाईबाउट ने यह तर्क दिया कि जहाँ तक स्थानीय सरकारें सार्वजनिक वस्तुएँ उपलब्ध कराने के लिए उत्तरदायी हैं, एक कुशल बाज़ार चयन प्रणाली विद्यमान हो सकती है। शहरों के एक समूह पर विचार करें, जो पुलिस सुरक्षा को छोड़कर बाकी बातों में एक जैसे (समान) हैं। जो शहर पुलिस पर काफी धन व्यय करते हैं, उनमें अपराध दर की कम रहने की काफी संभावना होती है। कम अपराध दर, उन परिवारों को आकर्षित करेगी जो जोखिम विमुख है तथा अपराध के शिकार होने के जोखिम को कम करने के लिए लिए अधिक कर देने को तैयार होते हैं। वे परिवार जो अधिक जोखिम उठाने को तैयार हैं, वे कम-कर/उच्च अपराध वाले शहरों में रहने का चयन कर सकते हैं। साथ ही, यदि कोई शहर अपराध की रोकथाम में सक्षम है, तो वह निवासियों को आकर्षित करेगा – यह देखते हुए कि प्रत्येक शहर में सीमित स्थान है, इस शहर में संपत्ति का मूल्य ऊपर उठ जाता है।

इस शहर में घरों की ऊँची कीमत, कम अपराध दर की ''कीमत'' है। टाईबाउट परिकल्पना के अनुसार, जब स्थानीय कीमतें (कम अथवा उच्च आवास लागत के रूप में) उपभोक्ता की प्राथमिकताओं (अधिमान) को प्रतिबिंबित करती हैं, जैसे कि वे निजी वस्तुओं के बाज़ार में करती हैं, तब सार्वजनिक वस्तुओं के एक कुशल मिश्रण का उत्पादन होता है। टाईबाउट के समाज में क्या भिन्न है कि लोग उपभोक्ता की प्रधानता का उपयोग बाज़ार में वस्तुओं के विभिन्न संयोगों को क्रय करके नहीं करते, बल्कि अपने कदमों से मतदान करके। इसका अर्थ है कि उपलब्ध सार्वजनिक वस्तुओं के बण्डलों और विभिन्न शहरों तथा उसमें भागीदार स्थानीय सरकार के बीच में से चुनाव करके।

7.6.3 सामाजिक चयन की समस्या : मतदान तंत्र

सरकार या सार्वजनिक क्षेत्र का एक दृष्टिकोण यह मानता है कि वह ''समाज की आवश्यकताओं'' को उपलब्ध कराने के लिए विद्यमान है। एक समाज व्यक्तियों का एक समूह है, और प्रत्येक के अधिमान का एक विशिष्ट समुच्चय होता है। इसलिए 'समाज की क्या आवश्यकताएँ हैं?' उसे परिभाषित करना, सामाजिक चयन की समस्या बन जाती है – किसी प्रकार से व्यक्तिगत अधिमानों को जोड़ना या कुल योग करना।

सार्वजनिक वस्तुओं में व्यक्ति के सीमांत लाभों के सही मूल्यांकन की गणना करना मुश्किल है। इस मुफ्तख़ोरी की समस्या का एक समाधान मतदान तंत्र की व्यवस्था द्वारा दिया जाता है। जब व्यक्ति मतदान करते हैं, तो अपनी प्राथमिकताओं (अधिमानों) को दिखाते हैं। मतदान को सामान्यतः आवंटन के प्रश्नों का निर्णय करने के लिए प्रयोग किया जाता है। हालाँकि मतदान को आवंटन संबंधी मुद्दों का वास्तविक समाधान माना जाता है, लेकिन अक्सर यह असंगत परिणाम की ओर ले जाता है।

ऐरो (Arrow) की असंभवता प्रमेय (सिद्धांत) के अनुसार, सामाजिक निर्णयों में व्यक्तिगत अधिमानों को जोड़ने की कोई प्रणाली ऐसी नहीं है जो सदैव एक रूप, गैर-मनमाना परिणाम उत्पन्न करेगी। मतदान के परिणामों के साथ सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या यह है कि जब व्यक्तियों के बीच सार्वजनिक वस्तुओं के लिए अधिमान (प्राथमिकताओं) में अंतर होता है, तब उन अधिमानों को जोड़ने या समग्र करने की कोई भी प्रणाली असंगत परिणामों की ओर ले जा सकती है। इसके अलावा, यह दिखाता है कि एजेंडा सैट करने वाले व्यक्ति का कितना प्रभाव है। बहुमत-शासन मतदान प्रणाली में एक और समस्या यह है कि यह लेन-देन (सौदेबाजी) की ओर ले जाती है।

सौदेबाज़ी तब होती है जब सम्मेलन के प्रतिनिधि मतों का लेन-देन करते हैं और कुछ विशेष कानून पास कराने के लिए एक-दूसरे की मदद के लिए सहमत हो जाते हैं। हाल में अभी कुछ समय से, अर्थशास्त्र में किए गए कार्यों ने अपना ध्यान केवल सरकार को व्यक्तिगत अधिमानों के विस्तार के रूप में मानकर केंद्रित नहीं रखा है बल्कि सरकारी अधिकारियों पर भी अपना एजेंडा और उद्देश्य रखने वाले व्यक्तियों के रूप में ध्यान केंद्रित किया है। यानी, माना जाता है कि सरकारी अधिकारी अपनी उपयोगिता को अधिकतम करते हैं, न कि सामाजिक हित को।

7.6.4 सार्वजनिक वस्तुओं के प्रावधान में सरकार की भूमिका

इसमें कोई प्रश्न नहीं कि सार्वजनिक वस्तुओं की व्यवस्था तथा बाह्यताओं पर नियंत्रण, दोनों ही में सरकार को अवश्य शामिल होना चाहिए। कोई भी समाज ऐसा नहीं रहा है जिसमें नागरिक एक असंयमित बाज़ार के दुरुपयोग से बचने के लिए एकजुट नहीं हुए और अपने लिए कुछ विशेष वस्तुएं/सेवाएँ सुलभ नहीं कराई हों जो बाज़ार में उपलब्ध नहीं थीं। सवाल यह नहीं है कि हमें सरकार की भागीदारी की आवश्यकता है या नहीं। सवाल यह है कि हमें सरकार की भागीदारी कितनी तथा किस प्रकार की चाहिए।

सरकारी भागीदारी के आलोचकों का कहना सही है कि सार्वजनिक वस्तुओं के उत्पादन के इष्टतम स्तर की मौजूदगी इस बात की गारंटी नहीं देती कि सरकार इसे हासिल कर लेगी। यह दिखाना आसान है कि सरकारें आमतौर पर सबसे कुशल स्तर को हासिल नहीं कर पाती हैं। यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि सरकारें बाह्यताओं पर नियंत्रण की सही मात्रा को हासिल करने में सक्षम हैं। बाज़ार संसाधनों के कुशल आवंटन में असफल हो सकते हैं, लेकिन सरकारें इसे बदतर बना सकती हैं। सामाजिक नुकसानों और लाभों को मापना कठिन और गलत है। उदाहरण के लिए, अम्लीय वर्षा की लागत का आंकलन, व्यवहारिक रूप से शून्य से अत्यधिक मात्रा तक फैल सकता है। जैसे कि सरकारी भागीदारी के आलोचकों ने माना है कि बाज़ार स्वयं पूर्ण कुशलता प्राप्त करने में असफल रहता है, सरकारी भागीदारी के समर्थकों को सरकार की विफलता को स्वीकार करना होगा। दोनों पक्षों के बहुमत को सहमत होना होगा कि हम बाह्यताओं को नियंत्रित करने का प्रयास करके तथा जो लोग चाहते हैं उन सार्वजनिक वस्तुओं के उत्पादन का अपना सर्वोत्तम प्रयास करके हम संसाधनों के कुशल आवंटन के नज़दीक पहुँच सकते हैं।

बोध प्रश्न 3

1) सार्वजनिक वस्तुओं को परिभाषित करें। वे शुद्ध निजी वस्तुओं से कैसे भिन्न हैं?

.....

.....

.....

.....

2) सार्वजनिक वस्तु की उपस्थिति में बाज़ार क्यों विफल होता है?

.....

.....

.....

.....

3) सार्वजनिक वस्तु के इष्टतम आवंटन के लिए सैम्युल्सन-मुस्ग्रैव समाधान की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

7.7 सार-संक्षेप

अक्सर जब हम लेन-देन में शामिल होते हैं या आर्थिक निर्णय लेते हैं तो इसका प्रभाव दूसरे या तीसरे पक्ष पर पड़ता है जिनको ध्यान में रखने के लिए हम निर्णय लेने वालों को कोई प्रोत्साहन नहीं मिलता है। ये बाह्यताएँ कहलाती हैं। जब बाह्य लागतों पर आर्थिक निर्णयों में विचार नहीं किया जाता है, तो हम ऐसी क्रियाओं में शामिल हो सकते हैं या ऐसी वस्तुओं का उत्पादन कर सकते हैं जो उस लायक (मूल्य की) नहीं होती हैं। जब बाह्य लाभों पर विचार नहीं किया जाता है तो हम उन चीज़ों को करने में विफल हो सकते हैं जो वास्तव में 'इसके लायक' होती हैं। इसका परिणाम संसाधनों का अकुशल आवंटन होता है। बाह्यताओं को नियंत्रित करने के लिए कई वैकल्पिक तंत्रों का उपयोग किया जाता है : (1) सरकार द्वारा आरोपित कर तथा सहाय्य, (2) निजी सौदेबाजी तथा लेन-देन, (3) विधिक उपचार जैसे कि प्रतिबंध और देयता संबंधी नियम, (4) बाह्यताओं का निवारण करने के लिए अधिकारों की बिक्री या नीलामी, और (5) प्रत्यक्ष विनियमन।

एक मुक्त बाज़ार में, कुछ विशेष वस्तुएँ तथा सेवाएँ (जिन्हें लोग चाहते हैं) पर्याप्त मात्रा में उत्पादित नहीं किए जाते हैं। इन सार्वजनिक वस्तुओं की कुछ ऐसी विशेषताएँ होती हैं जो निजी क्षेत्र के लिए इनके लाभकारी उत्पादन को कठिन या असंभव बना

देती हैं। सार्वजनिक वस्तुएँ, उपभोग में गैर-प्रतिस्पर्धी होती हैं (अर्थात्, इनके लाभ समाज के सदस्यों या समूह के सदस्यों को सामूहिक रूप से मिलते हैं), और/या इनके लाभ गैर-अपवर्जक होते हैं (अर्थात्, आमतौर पर उन लोगों को सार्वजनिक वस्तुओं के लाभ का आनंद लेने से वंचित करना असंभव होता है जिन्होंने इसके लिए भुगतान नहीं किया है)। सार्वजनिक वस्तु का एक उदाहरण राष्ट्रीय सुरक्षा है। सैद्धांतिक रूप से, प्रत्येक सार्वजनिक वस्तु की व्यवस्था का एक इष्टतम स्तर पाया जाता है। इस स्तर पर, समाज की प्रति इकाई भुगतान करने की तत्परता, उस वस्तु के उत्पादन की सीमांत लागत के बराबर होती है।

इस प्रकार का स्तर जानने के लिए, हमें प्रत्येक नागरिक के अधिमान को जानना आवश्यक होगा। टाईबाउट की परिकल्पना के अनुसार, सार्वजनिक वस्तुओं के एक कुशल मिश्रण का उत्पादन होता है जब स्थानीय भूमि/आवास की कीमतें तथा कर उपभोक्ता के अधिमान को दर्शाती है। जैसे कि वे निजी वस्तुओं के बाज़ार में करती है। क्योंकि हम सार्वजनिक वस्तुओं के लिए प्रत्येक के अधिमान को नहीं जान सकते, इसलिए हमें अपूर्ण सामाजिक चयन तंत्र, जैसे बहुमत का शासन, पर निर्भर रहना पड़ता है। यह सिद्धांत कि मुक्त बाज़ार, संसाधनों के कुशल आवंटन को प्राप्त नहीं कर पाते, हमें इस निष्कर्ष पर ले जाता कि सरकार की भागीदारी से अवश्य ही कुशलता प्राप्त होती है। सरकारें भी असफल होती हैं।

7.8 संदर्भ ग्रंथादि

Mankiw, (2007). N. G, Principle of Microeconomics. 4th edition, Thomason Higher Education , USA

Varian H.R, (2010). Intermediate microeconomics, W.W. Norton and Company

Case K.E., Fair R.C and Oster S.M, (2012). Principles of economics 10th edition. Pearson Education, USA

7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) भाग 7.2 देखें।

2) उपभाग 7.2.1 तथा 7.2.2 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 7.3 देखें।

2) उपभाग 7.3.2 देखें।

बोध प्रश्न 3

1) भाग 7.4 देखें।

2) भाग 7.5 देखें।

3) उपभाग 7.6.1 देखें।

इकाई 8 असममित सूचना (ASYMMETRIC INFORMATION)

संरचना

8.0 उद्देश्य

8.1 विषय प्रवेश

8.2 असममित सूचना

8.3 विपरीत चुनाव (Adverse Selection)

8.3.1 'नीबुओं' का बाजार

8.3.2 श्रम के लिए बाजार

8.3.3 बीमें के लिए बाजार

8.3.4 ऋण के लिए बाजार

8.4 असममित सूचना का हल : संकेतन एवं जांच/छानबीन (Solution to Asymmetric Information- Signalling and Screening)

8.4.1 संकेतन (Signalling)

8.4.2 छानबीन (Screening)

8.5 नैतिक जोखिम (Moral Hazard)

8.5.1 स्वामी अभिकर्ता समस्या (Principal-agent Problem)

8.6 सार-संक्षेप

8.7 संदर्भ ग्रंथादि

8.8 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

8.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित करने में सक्षम होंगेः

- असममित सूचना की अवधारणा की व्याख्या;
- किस प्रकार असममित सूचना बाजार को विफलता की ओर ले जाती है;
- असममित सूचना की समस्या के समाधान पर चर्चा;
- असममित सूचना की उपस्थिति में उत्पन्न हुए नैतिक संकट की समस्या को परिभाषित कर पाना; और
- स्वामी अभिकर्ता की समस्या की अवधारणा की पहचान।

8.1 विषय प्रवेश

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार संरचना में, बाजार को परिभाषित करने की एक महत्वपूर्ण मान्यता यह है कि लेन-देन में सम्मिलित सभी पक्षों के बीच सममित तथा पूर्ण सूचना होती है। इसका अर्थ यह है कि, हम मानते हैं कि कोई भी विक्रेता, उत्पाद की विशेषताओं के विषय में क्रेता से अधिक नहीं जानता है और कोई भी क्रेता उत्पाद की

लागत के विषय में, विक्रेता से अधिक नहीं जानता है। इस प्रकार की मान्यता पूरी तरह से आवस्तविक है, क्योंकि वास्तविक जीवन में लेने–देन के दौरान अकसर एक पक्ष को दूसरे पक्ष की तुलना में विक्रय की गयी वस्तुओं एवं सेवाओं की विशेषताओं अधिक सूचना होती है। यह स्थिति असममित सूचना के रूप में जानी जाती है।

सामान्यतः उस वस्तु की गुणवत्ता के विषय में उस वस्तु का विक्रेता, क्रेता से अधिक जानता है। श्रमिक सामान्यतः अपनी क्षमताओं के बारे में अपने संभावित नियोक्ता से अधिक जानते हैं। पुरानी कार के बाजार में, विक्रेता के पास कार की सही स्थिति के बारे में, क्रेता की तुलना में अधिक सूचना होती है। वित्तीय बाजार में, ऋण दाता के पास ऋण लेने वाले के ऋण न चुकाने के जोखिम के विषय में सापेक्ष रूप से स्वयं ऋण लेने वाले की तुलना में कम जानकारी होती है। बीमा बाजार में, बीमा कंपनी के पास बीमा कराने वाले व्यक्ति के स्वास्थ्य की स्थिति की जानकारी, स्वयं बीमा कराने वाले की तुलना में कम होती है। ये असममित सूचना की उपस्थिति के कुछ सामान्य उदाहरण हैं।

अर्थशास्त्र की प्रथम क्षेम (कल्याण) प्रमेय के अनुसार, पूर्ण प्रतियोगिता संसाधनों के पैरेटो कुशल आवंटन की ओर ले जाती है। इस प्रमेय के लागू होने के लिए एक प्रमुख मान्यता यह है कि बाजार में व्यापार से सम्बन्धित सभी सूचनाएँ उसमें सम्मलित सभी अभिकर्ताओं के पास समान रूप से पायी जाती हैं। जब ऐसी मान्यता लागू होने में असफल होती है, अर्थात, जब जानकारी असममित होती है, अर्थात एक अभिकर्ता के पास व्यापार सम्बन्धित जानकारी, दूसरे अभिकर्ताओं से अधिक होती है, तब ये मूल्य बिगड़ जाते हैं और हमें संसाधनों का पैरेटो कुशल आवंटन नहीं मिलता। यह बाजार विफलता की स्थिति के रूप में जाना जाता है। वर्तमान इकाई में असममित सूचना की संकल्पना पर चर्चा की जाएगी कि कैसे यह बाजार को विफलता की ओर ले जाती है, और कैसे असममित सूचना की उपस्थित में संतुलन प्राप्त किया जाता है।

8.2 असममित सूचना

असममित सूचना की अवधारणा को सर्वप्रथम जार्ज अकरलाफ ने 1970 में अपने शोध पत्र The market for "Lemons": Quality Uncertainty and The Market Mechanism. में विश्लेषित किया था। उन्होंने मोटर गाड़ी बाजार के एक उदाहरण पर विचार किया था। असममित सूचना तभी मौजूद होती है, जब व्यापार के भिन्न-भिन्न पक्षों के बीच असमान सूचना पायी जाती है। अर्थात, यदि हम कल्पना करें कि बाजार में विक्रेता एवं क्रेता हैं, तब असममित सूचना के अन्तर्गत, एक अभिकर्ता के पास दूसरे अभिकर्ता से अधिक (या कम) सूचना होगी। उदाहरणस्वरूप, पुरानी कारों के बाजार में, जोकि लेमन का बाजार भी कहा जाता है, पुरानी कारों के विक्रेता के पास, कार के वास्तविक मूल्य के विषय में, क्रेता से अधिक सूचना होती है। यह असममित सूचना विक्रता को बाजार की औसत गुणवत्ता वाली वस्तुओं से कम गुणवत्ता वाली वस्तुओं को विक्रय करने के लिए प्रेरित करती है। इससे बाजार में वस्तुओं की औसत गुणवत्ता कम होगी और साथ ही बाजार का आकार भी कम होगा। हालांकि, कम सूचना रखने वाला क्रेता अक्सर व्यापार करने के लिए हतोत्साहित होता है, क्योंकि वह एक क्षतिग्रस्त कार यानी लेमन को खरीदने के जोखिम को कम करना चाहता है। इसलिए असममित सूचना की उपस्थिति में यह परिणाम हो सकता है कि कोई व्यापार हो ही ना। एक और उदाहरण के रूप में, स्वास्थ्य बीमा बाजार में, बीमा क्रेता के पास

उसके स्वास्थ्य की स्थिति के विषय में बीमा योजनाओं को बेचने वाली बीमा कंपनी से अधिक सूचना होती है। वास्तविक जीवन में इस प्रकार के कई अन्य उदाहरण हैं। अससमित सूचना की मौजूदगी तथा अटलता को नकारा नहीं जा सकता और इस कारण कई बाजार व्यापार करने में असफल हो जाते हैं। इसका साधारण अर्थ है कि सूचना की समरूपता के अभाव में, दोनों पक्ष बाजार में व्यापार योग्य मूल्य का निर्माण करने में असमर्थ होते हैं और बिना व्यापार योग्य मूल्य के व्यापार हो नहीं सकता। इस प्रकार असममित सूचना बाजार को विफलता की ओर ले जाती है।

असममित सूचना के कारण उत्पन्न हुई बाजार विफलता को सही करने का एक अन्य तरीका यह है कि ऐसी असममित जानकारी को प्रभावहीन करने के लिए जानकारी का ज्यादा समान वितरण हो। उदाहरण के लिए, पुरानी कार बाजार में, एक संगठन द्वारा किसी प्रकार के प्रमाणीकरण या मूल्यांकन क्रेता और विक्रेता के बीच पुरानी कार की सही वास्तविक मूल्य सम्बन्धी सूचना पहुंचाने में सहायता करें। स्वास्थ्य बीमा के बाजार में, स्वास्थ्य जांच क्रेता के स्वास्थ्य की सही स्थिति को प्रकट कर सकती है। ऋण के वित्तीय बाजार में, कर्जदार का कर्ज लेने का स्कोर, कर्जदार की वास्तविक जोखिम दर को प्रकट करने में सहायक हो सकता है।

8.3 विपरीत चुनाव

असममित सूचना अक्षमता को बढ़ाती है। विपरीत चुनाव असममित सूचना की उपस्थिति के परिणामस्वरूप हुई बाजार विफलता का एक बड़ा कारण है। विपरीत चुनाव का संदर्भ एक ऐसी स्थिति से है, जिसमें वे पक्ष जो असममित सूचना की उपस्थिति से लाभ उठाने वाले हैं, व्यापार करने में उन पक्षों से ज्यादा इच्छुक होते हैं, जो असममित सूचना के कारण हानि सहन करते हैं। पिछले भाग में उल्लेखित उदाहरणों में, यदि पुरानी कारों के क्रेता अच्छी कारों और बुरी कारों में भेद नहीं कर सकते, तो विक्रेता केवल लेमन अर्थात् बुरी गुणवत्ता की कारों को बेचने के लिए प्रेरित हो सकते हैं। अगर बीमा कंपनियां आवेदकों की वास्तविक स्वास्थ्य स्थिति का मूल्यांकन करने में कठिनाई का सामना करेंगे, तो वे केवल उच्च जोखिम बीमा धारकों को ही सेवा प्रदान करने की ओर अग्रसर होंगे, और यदि संभावित नियोक्ता को कर्मचारियों की क्षमताओं का मूल्यांकन करने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा तो वे अयोग्य कर्मचारियों को नियुक्त करने कर लेंगे। इन सभी उदाहरणों में सूचित पक्षों को अर्थात् पुरानी कार का विक्रेता, बीमा खरीददार और कर्मचारी– सभी व्यापार करने के इच्छुक हैं, जबकि व्यापार असूचित पक्ष अर्थात् पुरानी कार का खरीदार, बीमा कंपनी और नियोक्ता के लिए कम लाभप्रद है। यह स्थिति विपरीत चुनाव के नाम से जानी जाती है। जब प्रभावित असूचित पक्ष को, यह आभास होता है कि वह विपरीत चुनाव का सामना कर रहे हैं, तो वह व्यापार करने के लिए के अनिच्छुक हो जाते हैं, जिसके फलस्वरूप बाजार विफल होता है।

नीचे कुछ ऐसे महत्वपूर्ण उदाहरणों पर चर्चा की गई है, जहाँ असममित सूचना प्रचलित है और जो विपरीत चुनाव और बाजार की विफलता की ओर अग्रसर होते हैं।

8.3.1 'नींबुओं' का बाज़ार

ऐसे बाजार पर विचार करें जहां खरीदार और विक्रेता को बेची जा रही वस्तु के विषय में एक जैसी जानकारी नहीं है। मान लें 100 विक्रेता और 100 क्रेता पुरानी कारों के

बाज़ार में हैं। सभी जानते हैं कि सारी पुरानी कारें एक जैसी स्थिति में नहीं हैं और इस बात की 50 प्रतिशत संभावना है कि अच्छी (आलू बुखारा) कार मिल जाए और घटिया (नींबू) कार मिलने की संभावना भी 50 प्रतिशत ही है। किंतु कार विक्रेता को उसकी असली गुणवत्ता की सही जानकारी है जबकि खरीदार यह नहीं जानता कि कौन-सी 'अच्छी' है कौन-सी 'खराब'। साथ ही बाज़ार से किसी कार की गुणवत्ता का सत्यापन करा पाना भी संभव नहीं है।

मान लें कि घटिया कार का मालिक उसे रु. 100,000 में तथा बढ़िया कार का मालिक रु. 200,000 में बेचना चाहता है। मान लें कि खरीदार एक अच्छी कार के लिए रु. 240,000 भी देने को तैयार है किंतु घटिया के लिए वह रु. 120,000 से ज्यादा नहीं देना चाहता। यदि कारों की गुणवत्ता का बाज़ार से सत्यापन संभव होता तो घटिया कार की कीमत रु. 100,000 से रु. 120,000 के बीच रहती तथा बढ़िया कारें रु.200,000 से रु. 240,000 के बीच बिक रही होतीं। किंतु खरीददार को ठीक से किसी कार की गुणवत्ता नहीं मालूम होती वह तो केवल किसी औसत कार की हालत का अंदाजा लगा सकता है। अच्छी या बुरी कार पाने की संभावना 50 प्रतिशत ही है। अतः एक आय खरीदार के लिए कार का प्रत्याशित मूल्यमान होगा :

$$E(B) = \frac{1}{2} \times 240000 + \frac{1}{2} \times 120000 = \text{Rs. } 1{,}80{,}000.$$

किंतु उस कीमत पर तो केवल घटिया कारों के मालिक ही बेचने को तैयार होंगे (क्योंकि $E(B) = \text{रु. } 180000 > E(S_{Lemon}) = \text{रु. } 100000$)। किंतु अच्छी कार के मालिक इस कीमत पर बेचना नहीं चाहेंगे (क्योंकि $E(B) = \text{रु. } 180000 < E(S_{Plum}) = \text{रु. } 200000$)। क्रेता एक औसत कार के लिए जो कीमत देना चाहता है वह उस कीमत से कम है जो विक्रेता अच्छी कार के लिए पाना चाहता है। अतः रु. 180,000 में तो केवल 'नींबू' या घटिया कारें ही मिलेंगी। भले ही, खरीदार अच्छी कारों के लिए जो कीमत देने को तैयार हैं, वह विक्रेता की आशा से अधिक है पर उनका कोई सौदा नहीं हो पाएगा। यही बाज़ार की विफलता की समस्या है।

पराकाष्ठ रूप में, यदि क्रेता को पता हो कि वहां उसे घटिया कारें ही मिलेंगी तो वह रु. 180,000 भी देने को तैयार नहीं होगा। फिर तो संतुलन कीमत कहीं रु. 120,000 से रु. 100,000 के बीच तय हो जाएगी। इस कीमत पर बाज़ार विभक्त हो जाएगा। अच्छी कारों के मालिक इस बाज़ार को यहां बेचने की पेशकश नहीं करेंगे।

यहाँ अच्छी और खराब कारों के विक्रेताओं के बीच एक बाह्यता की समस्या है जिसकी परिणति बाज़ार की विफलता में हो जाती है। घटिया कारें बेचने वाले खरीदारों की बाज़ार में औसत कारों विषयक धारणा को दुष्प्रभावित कर देते हैं। यह अच्छी कारों के विक्रेताओं को और हतोत्साहित कर देता है। यह एक बाह्यता की समस्या ही है। अतः सूचना असममिति की अवस्था में जहाँ बहुत-सी निम्न गुणवत्ता की चीज़ें बेची जा रही हों क्रेता की धारणा बदल जाती है और उसका भुगतान का उत्साह कुंठित हो जाता है। अतः अच्छी गुणवत्ता की चीज़ों के मालिकों के लिए ऐसे बाज़ार में अपनी चीज़ें बेचना कठिन हो जाता है।

8.3.2 श्रम के लिए बाजार

अब चित्र 8.1 में श्रम के बाजार पर विचार करें। हमने श्रमिकों की संख्या को क्षैतिज अक्ष पर तथा मासिक वेतन को लम्ब अक्ष पर चिन्हित किया है। चित्र उच्च क्षमता तथा निम्न क्षमता वाले श्रमिकों के मांग वक्रों को दर्शाता है। जहाँ श्रमिकों की क्षमताए संभाव्य नियोक्ता को प्रत्यक्ष हैं, जिन्हें क्रमशः DH तथा DL से दर्शाया गया है। चित्र में उच्च तथा निम्न क्षमता वाले श्रमिकों के पूर्ति वक्र को क्रमशः SH तथा SL द्वारा दर्शाया गया है। जितना उच्च मासिक वेतन होगा उतना ही उच्च क्षमता वाले श्रमिक रोजगार को स्वीकार करने के इच्छुक होंगे।

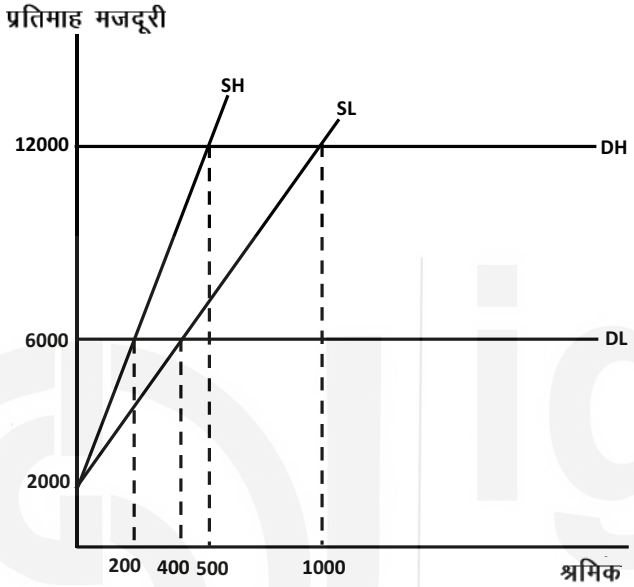

चित्र 8.1

इस चित्र का उपयोग करते हुए, हम देखते हैं कि कैसे असममित सूचना श्रम बाजार में मौजूद रहती है। आमतौर पर श्रमिक को अपनी क्षमताओं का ज्ञान अपने संभाव्य नियोक्ता से अधिक होता है। यहां हम मानते हैं कि श्रमिक को उसकी क्षमताओं के अनुसार भुगतान किया गया है। आरम्भ में हम ऐसा मानते हैं कि संभाव्य नियोक्ता एक उच्च क्षमता एवं एक निम्न क्षमता वाले श्रमिक में सरलता से अन्तर कर सकता है। तदानुसार, एक उच्च क्षमता वाले श्रमिक को उतना वेतन दिया जाएगा जहां DH एवं SH को प्रतिच्छेदन कर रहा है। नियुक्त किए गए उच्च क्षमता वाले श्रमिकों की संख्या 500 होगी और उन्हें 12,000 रूपये मासिक वेतन का भुगतान किया जाएगा। निम्न क्षमता वाले कर्मचारी के संतुलन का बिन्दु वहां है, जहाँ SL, DL को काटता है जहां 400 निम्न क्षमता वाले श्रमिकों को 6,000 रूपये मासिक मजदूरी का भुगतान किया जाएगा। जब बाजार संतुलन में होता है, निम्न क्षमता वाले श्रमिकों को, उच्च क्षमता वाले श्रमिकों की तुलना में कम मजदूरी का भुगतान किया जाएगा। ऐसी स्थिति में हम असममित सूचना की स्थिति का सामना नहीं करते हैं क्योंकि नियोक्ता उच्च क्षमता एवं निम्न क्षमता वाले श्रमिकों में भेद करने में सक्षम होता है।

आइए अब ऐसा उदाहरण देखते हैं, जहाँ हमारे सामने श्रम बाजार में असममित सूचना की स्थिति आती है। चित्र 8.2 में, वक्र S उच्च तथा निम्न क्षमता वाले श्रमिकों की कुल पूर्ति को एक साथ दिखाता है। यहाँ वक्र D निम्न क्षमता वाले एवं उच्च क्षमता वाले श्रमिकों का औसत दिखाते हुए, श्रमिकों की औसत मांग को प्रदर्शित करता है, जहां

DH उच्च क्षमता वाले श्रमिकों की मांग का प्रतिनिधित्व करता है और DL निम्न क्षमता वाले श्रमिकों की मांग का प्रतिनिधित्व करता है। SH तथा SL क्रमशः उच्च क्षमता वाले एवं निम्न क्षमता वाले श्रमिकों की पूर्ति को प्रदर्शित करता है। अब हम ऐसा मानते हैं कि संभाव्य नियोक्ता उच्च तथा निम्न क्षमता वाले कर्मचारियों में भेद करने में सक्षम नहीं है। इसलिए नियोक्ता के लिए श्रम की मांग को वक्र D द्वारा दिखाया गया है।

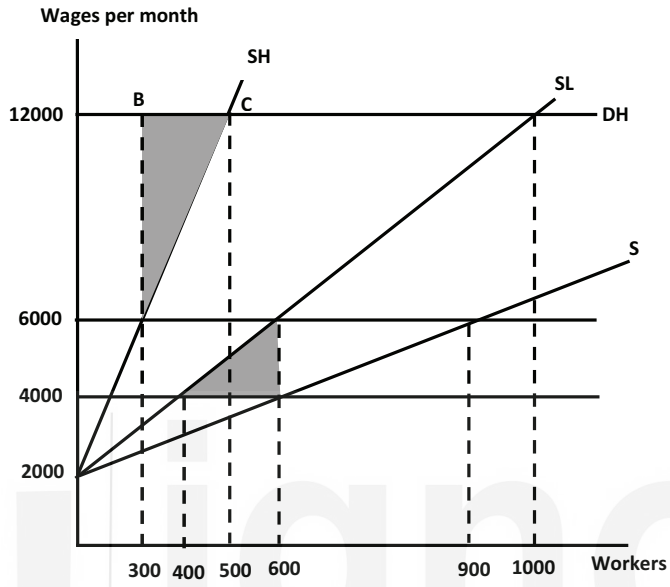

चित्र 8.2

श्रम बाजार का संतुलन जोकि S तथा D वक्र के प्रतिच्छेदन बिन्दु पर है, इस बिन्दु पर बाजार में श्रम का कुल 900 श्रमिक रोजगार में हैं। इन 900 में से 400 निम्न क्षमता वाले श्रमिकों को मासिक वेतन 4000 रुपये का भुगतान किया जाएगा, जबकि 500 उच्च क्षमता वाले श्रमिकों का मासिक वेतन 12000 रुपये का भुगतान किया जाएगा। यह एक संभव परिणाम हो सकता है, जब श्रम की गुणवत्ता को ध्यान में रखे क्योंकि इस मामले में श्रम की क्षमता में अन्तर नहीं किया जा सकता है, बाजार में 900 श्रमिकों को समान रूप से 6000 रुपये मासिक वेतन के रूप में अदा किए जाएंगे। यह संभाव्य नियोक्ता की अपने श्रमिकों की क्षमताओं के विषय में असममित सूचना की उपस्थिति के कारण हुआ है। इसके परिणामस्वरूप एक उच्च क्षमता वाले श्रमिक को कम भुगतान को रहा है और निम्न क्षमता वाले श्रमिक को अधिक भुगतान हो रहा है। ऐसी स्थिति में उच्च क्षमता वाले श्रमिक श्रम बाजार में भाग लेने के लिए हतोत्साहित होंगे। केवल 300 उच्च क्षमता वाले श्रमिक ही रुपये 6000 प्रतिमाह की दर पर श्रम बाजार में भाग लेंगे। चूँकि निम्न क्षमता वाले श्रमिकों को अधिक भुगतान हो रहा है तो वे बाजार में अधिक भाग लेने के लिए प्रोत्साहित होंगे। अतः 400 निम्न क्षमता वाले श्रमिकों के स्थान पर 600 निम्न क्षमता वाले श्रमिक 6000 रुपये मासिक वेतन पर बाजार में भाग लेंगे। बाजार में, आदर्श रूप में यदि सूचना की असममितता उपस्थित नहीं है, तो कुल 900 कर्मचारी नियुक्त किए जाएंगे जिनमें से 400 निम्न क्षमता और 500 उच्च क्षमता वाले कर्मचारी होंगे। असममित सूचना की उपस्थिति में, 300 उच्च क्षमता वाले श्रमिक एवं 600 निम्न क्षमता वाले श्रमिक होंगे। इससे यह पता चलता है कि बाजार में असममित सूचना की उपस्थिति में श्रम की गुणवत्ता में गिरावट आती है। ऐसी स्थिति को विपरीत चुनाव कहा जाता है। असममित सूचना के अभाव में संभाव्य नियोक्ता 500 उच्च क्षमता वाले श्रमिक तथा 400 निम्न क्षमता वाले श्रमिक

भर्ती करता, परन्तु उसने 600 निम्न क्षमता वाले श्रमिक तथा 300 उच्च क्षमता वाले श्रमिकों को भर्ती किया। इसलिए असममित सूचना की उपस्थित होने के कारण बाजार विपरीत बन गया।

असममित सूचना के कारण अचल भार हानि (Dead weight loss due to asymmetric information)

चित्र 8.2 में ABC क्षेत्र उच्च क्षमता वाले श्रमिकों की निम्न भर्ती के कारण हुई अचल भार हानि तथा DEF क्षेत्र निम्न क्षमता वाले श्रमिकों की अधिक नियुक्ति द्वारा उत्पन्न हुई अचल भार हानि को दर्शाता है। उपरोक्त मामले में हमने देखा कि श्रम बाजार के संतुलन में, असममित सूचना की उपस्थिति के कारण, उच्च क्षमता वाले श्रमिकों का अंश उस स्थिति के तुलना में कम होगा, जितना संभावित नियोक्ता को भर्ती से पहले श्रमिकों की क्षमताओं की पहचान करने में होता। असममित सूचना के कारण निम्न क्षमता वाले श्रमिक, उच्च क्षमता वाले श्रमिकों को बाजार से बाहर कर देते हैं। यह स्थिति बाजार की विफलता का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

8.3.3 बीमें का बाजार

बीमा बाजार में असममित सूचना बहुत बड़ी मात्रा में मौजूद रहती है। एक व्यक्ति के स्वास्थ्य सम्बन्धी अधिकतम एवं सही जानकारी का ज्ञान उस व्यक्ति को स्वयं होता है। बीमा कंपनी को अकसर व्यक्ति की वास्तविक स्वास्थ्य स्थिति की सूचना के अभाव के कारण हानि उठाती है। ऐसे व्यक्ति जिन्हें उच्च स्वास्थ्य या अक्षमता जोखिम हैं, स्वास्थ्य बीमा लेना पसंद करते हैं, ताकि उनके मेडिकल बिलों का भुगतान हो जाए, जबकि निम्न स्वास्थ्य या अक्षमता जोखिम वाले, स्वस्थ लोगों को सामान्यतः बीमे की आवश्यकता नहीं होती और वो बार–बार या उच्च मूल्य का बीमा लेने के इच्छुक नहीं होते। यदि बीमा कंपनी अधिक अस्वस्थ्य या वृद्ध लोगों को बीमा बेचती है, तो उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी होगी, जोकि एक अधिकतम लाभ कमाने वाली कंपनी कभी नहीं चाहेगी।

असममित सूचना की उपस्थिति में, एक बीमा कंपनी के लिए उच्च स्वास्थ्य जोखिम एवं निम्न स्वास्थ्य जोखिम वाले व्यक्तियों की छँटाई करना अत्यन्त मुश्किल होता है। यह स्थिति बीमा बाजार को विपरीत चुनाव की समस्या की ओर ले जाती है। जब बीमा कंपनी हर व्यक्ति विशेष के लिए समरूप शर्ते बनाती है, तो वह सापेक्ष रूप से स्वास्थ्य व्यक्ति विशेष के लिए कठोर शर्तें, एवं सापेक्ष रूप से अस्वस्थ व्यक्ति के लिए सरल शर्ते रखती है। इस परिदृश्य में, स्वस्थ्य व्यक्ति बीमा बाजार में भाग लेने के लिए हतोत्साहित होंगे एवं अस्वस्थ व्यक्ति प्रोत्साहित होंगे। ऐसी स्थिति में विपरीत चुनाव की समस्या प्रबल होगी क्योंकि बीमा के लिए आवेदन करने वाले व्यक्तियों में अस्वस्थ व्यक्तियों की संख्या, स्वस्थ व्यक्तियों की तुलना में अधिक होगी, जिसके फलस्वरूप बीमा कंपनी को लाभ की हानि होगी और जिसके परिणामस्वरूप बीमा बाजार में, बाजार विफलता होगी।

8.3.4 ऋण के लिए बाजार

ऋण के बाजार में भी असममित सूचना की समान समस्या उत्पन्न होती है। ऋण के बाजार में, कर्जदार को अपने कर्ज की पात्रता की सही जानकारी, देनदार की तुलना में अधिक होती है। दूसरे शब्दों में, देनदार के लिए ग्राहक के ऋण की सही पात्रता का आंकलन अकसर मुश्किल होता है। गलत ग्राहक का अर्थ होगा– भुगतान ना

करने का अधिक जोखिम और परिणामस्वरूप देनदार को अधिक हानि। एक बार फिर लेमन के बाजार की भाँति, निम्न गुणवत्ता या उच्च जोखिम वाले कर्जदार, उच्च गुणवत्ता या निम्न जोखिम वाले कर्जदारों की तुलना में कर्ज लेने में ज्यादा इच्छुक होंगे। यह औसत जोखिम पर आधारित ब्याज दरों को ऊपर की तरफ जाने के लिए बाध्य करेगा और बदले में निम्न जोखिम वाले कर्जदारों को बाजार से बाहर कर देगा एवं निम्न गुणवत्ता वाले कर्जदारों की संख्या को बढ़ाएगा। ऐसी स्थिति में ऋण बाजार में विपरीत चयन की समस्या पैदा होगी।

8.4 असममित सूचना का हल : संकेतन एवं जांच/छानबीन

8.4.1 संकेतन

असममित सूचना की उपस्थिति अक्सर विपरीत चुनाव की समस्या को पैदा करती है और इसके फलस्वरूप बाजार विफलताएं होती हैं। अब क्या किया जाये जब असममित सूचना व्याप्त होती हैं? बाजार संकेतन ही एक ऐसा माध्यम है, जिसमें क्रेता एवं विक्रेता इस समस्या से निपट सकते हैं। बाजार संकेतन की संकल्पना वहां होती है, जहां क्रेता एवं विक्रेता कम सूचना वाले दूसरे पक्ष को, बाजार में व्यापार में अपने उत्पाद की सूचना में वृद्धि के लिए संकेत देते हैं।

बाजार संकेतन किस प्रकार कार्य करता है, यह देखने के लिए हम श्रम बाजार के असममित सूचना के एक उदाहरण पर विचार करेंगे। श्रम बाजार में, जहां उच्च एवं निम्न क्षमता वाले श्रमिक उपस्थिति हैं और सरलता से इनमें अन्तर नहीं किए जा सकते हैं, ऐसी स्थिति में किसी की नियुक्ति संभावित नियोक्ता को काफी महंगी पड़ सकती है। यदि एक नियोक्ता ऐसे कार्य के लिए जिसमें उच्च क्षमता की आवश्यकता हो के लिए निम्न क्षमता वाले कर्मचारी को नियुक्त करता है, तो उसे अत्याधिक हानि होगी। ऐसी स्थिति में बाजार संकेतन बढ़िया तरीके से कार्य करता है। उच्च क्षमता वाले श्रमिक नियोक्ता को अपनी क्षमताओं के विषय में संकेत दे सकते हैं, जो अन्य निम्न क्षमता वाले श्रमिकों से अलग पहचाने जा सकते हैं। ये संकेत साक्षात्कार के लिए अच्छे से तैयार होना, शिष्टाचार प्रदर्शित करना, सभ्य भाषा में वार्तालाप करना, उच्च शिक्षित होना, उच्च शैक्षणिक स्तर पर होना आदि हो सकते हैं। इस प्रकार, उच्च क्षमता वाले श्रमिक, संभावित नियोक्ता को अपने सामर्थ्य के विषय में संकेत देते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि श्रमिक को उच्च गुणवत्ता का श्रेय मिले, निम्न क्षमता वाले श्रमिकों में इससे विपरीत विशेषताऐं कायम रहती हैं।

8.4.2 छानबीन

असममित सूचना की उपस्थिति सम्बन्धित पक्षों को एक दूसरे के साथ संवाद करने के लिए प्रोत्साहित करती है। पिछले उपभाग में हमने देखा कि किस प्रकार सूचित दल (श्रमिक), असूचित दलों (संभावित नियोक्ता) को, सूचना की असममितता की क्षतिपूर्ति करने के लिए सूचना प्रदान करते हैं। यहां, सूचित दल, अपनी संचित सूचना को संकेतन द्वारा असूचित पक्ष को सम्प्रेषण करता है। सूचना की असममितताओं का ध्यान रखने के लिए एक और तरीका भी है, जिसमें असूचित पक्ष, सूचित पक्ष के लिए या उन वस्तुओं के लिए जो सूचित पक्ष द्वारा व्यापार की जाती हैं, के विषय में एक परीक्षण रखकर सम्प्रेषण का आरंभ कर सकता है। उदाहरण के लिए, जैसे पुरानी कार के बाजार में, पुरानी कार का संभावित क्रेता मैकेनिक द्वारा कार का निरीक्षण करवा

कर या उस कार का दुर्घटना अभिलेख देखकर इसकी गुणवत्ता का अनुमान लगा सकता है। ठीक इसी प्रकार, एक जीवन बीमा कंपनी, जीवन बीमा के आवेदक के स्वास्थ्य की सूचना प्राप्त करने के लिए, आवेदक के स्वास्थ्य अभिलेख प्राप्त करके, उसके वर्तमान डाक्टर से सम्पर्क करके, और उसका शारीरिक निरीक्षण करके बीमा आवेदक की स्वास्थ्य सम्बन्धी सूचना प्राप्त कर सकती है। संकेतन और छानबीन में एक महत्वपूर्ण अन्तर है। संकेतन में सूचित पक्ष है जो संवाद आरम्भ करता हैं, वहीं दूसरी ओर, छानबीन में असममित सूचना की क्षतिपूर्ति करने के लिए सम्प्रेषण, कम सूचना वाला पक्ष आरम्भ करता है।

बोध प्रश्न 1

1) असममित सूचना को परिभाषित कीजिए। यह किस प्रकार, बाजार विफलता की ओर ले जाती है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) लेमन का बाजार किस प्रकार विपरीत चुनाव में परिवर्तित हो जाता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) विपरीत चुनाव की समस्या का क्या उपाय हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

8.5 नैतिक जोखिम

नैतिक जोखिम, असममित सूचना का एक परिणाम है, जहां असममितता विभिन्न पक्षों के प्रच्छन्न कार्यों के कारण उत्पन्न होती है जिससे व्यापार में एक पक्ष का कार्य, दूसरे पक्ष द्वारा निरीक्षित नहीं किया जाता है, जो बदले में दूसरे पक्ष के फायदे में होता है। उदाहरण के लिए– बीमा बाजार के मामले में, एक बीमा धारक का मृत्यु या शारीरिक असमर्थता का जोखिम, उसके अस्वस्थ जीवनचर्या जिसमें धूम्रपान, अत्यधिक मदिरा सेवन, व्यायाम की कमी होना समाविष्ट हैं, ज्यादा उच्च होगा। हालांकि, बीमा कंपनी, जिससे व्यक्ति विशेष ने जीवन बीमा या दुर्घटना लिया है, के लिए इस व्यक्ति की

जीवनचर्या को देखते हुए उसके व्यवहार की निगरानी करना और बीमें के बीमा शुल्क को उसके अनुसार समायोजित करना काफी कठिन होगा।

नैतिक जोखिम, श्रम बाजार में अक्सर उत्पन्न होता है, क्योंकि नियोक्ता अपने श्रमिकों के व्यवहार एवं प्रयासों की पूर्णतया निगरानी नहीं कर सकते हैं। इस कारण कर्मचारी, नियोक्ता की अपेक्षाओं से कम प्रयास करते हैं और इसके कारण अक्षमता होती है। नैतिक जोखिम बड़े निगमों में भी व्याप्त हैं, जहां व्यक्तिगत प्रबंधक, कंपनी के खर्चे पर, अपने निजी हित में कार्यवाही कर सकते हैं। इस विषय में हम अगले भाग में चर्चा करेंगे। सामान्यतः, नैतिक जोखिम तभी उत्पन्न होता जब लेन देन में एक पक्ष कोई ऐसा कार्य करता है जो दूसरे व्यापारिक पक्ष द्वारा देखा नहीं जाता है, और यह बाद वाले पक्ष के लाभ की संभावना या मात्रा को प्रभावित करता है।

नैतिक जोखिम की व्याख्या करने वाला एक सरल उदाहरण तथा कैसे यह लागत में वृद्धि की ओर ले जाता है, इस प्रकार है। एक कंपनी के रात के सिक्योरिटी गार्ड के मामले को देखते हैं। क्योंकि वह रात में कार्य करता है, तो कोई भी सिक्योरिटी गार्ड के कार्य को देखने वाला कोई नहीं होता हैं। यह गार्ड को काम से कामचोरी करने का लालच देता है, अर्थात ठीक प्रकार से सुरक्षा ना करना। मान लीजिए वह कार्य के घण्टों के दौरान बार–बार सो जाता है, क्योंकि वह जानता है कि उसके कार्य को कोई देख नहीं रहा है। इसके परिणामस्वरूप, एक रात कंपनी मे चोरी हो जाती है। इसकी वजह से कंपनी को भारी क्षति उठानी पड़ सकती है। गार्ड के व्यवहार में नैतिक जोखिम की उपस्थिति कंपनी को भारी क्षति पहुंचा सकती है। नैतिक जोखिम, असममित सूचना की समस्या से सम्बन्धित है, क्योंकि फर्म ड्यूटी पर तैनात सिक्योरिटी गार्ड के व्यवहार को देखने में अक्षम है। अतः असममित सूचना की उपस्थिति बाजार को विफलता की ओर ले जाती है।

8.5.1 स्वामी अभिकर्ता समस्या

नैतिक जौखिम की मौजूदगी, स्वामी तथा अभिकर्ता की वजह से होती है। अभिकर्ता, स्वामी के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, स्वामी द्वारा नियुक्त व्यक्ति विशेष होते हैं। असममित सूचना के उपस्थिति में, अभिकर्ता, स्वामी के लक्ष्यों को हासिल करने की बजाय, अपने ही लक्ष्यों को हासिल करने में ज्यादा प्रयास करता है। उदाहरण के लिए, जैसे कर्मचारी (अभिकर्ता) अपनी नौकरी से कामचोरी करता है, जब नियोक्ता (स्वामी) उसके कार्यों को नहीं देख रहा होता है।

स्वामी अभिकर्ता के सम्बन्ध के सामान्य उदाहरणों में निगम प्रबन्धन (अभिकर्ता) तथा शेयरधारी (स्वामी), राजनीतिज्ञ (अभिकर्ता) तथा वोटर (स्वामी), ब्रोकर (अभिकर्ता) तथा बाजार में क्रेता एवं विक्रेता (स्वामी) हैं। एक कानूनी सहायता लेने वाले ग्राहक के उदाहरण पर विचार करें तो, वह चकित रहता है कि उसके वकील द्वारा, जिस कानूनी प्रक्रिया की अनुशंसा की गई है, वास्तव में वह उसके लिए आवश्यक है या नहीं, या यह सिर्फ वकील को आय की बढ़ाने के लिए की जा रही हैं। वास्तव में, यह समस्या हर उस संदर्भ में उत्पन्न हो सकती है, जहां एक पक्ष, दूसरे पक्ष द्वारा किसी कार्य को कराने के लिए भुगतान करता है, तथा उस अभिकर्ता का परिणाम में कम या बिलकुल हिस्सा नहीं होता ह्वै।

स्वामी–अभिकर्ता समस्या तब उत्पन्न होती है, जब विभिन्न पक्षों के भिन्न-भिन्न हित होते हैं और सूचना की असममितता की उपस्थिति के कारण, अभिकर्ता के पास, स्वामी

से अधिक सूचना होती है। ऐसे मामले में, स्वामी यह प्रत्यक्ष रूप से सुनिश्चित नहीं कर सकता है कि अभिकर्ता स्वामी के सर्वोत्तम हित में कार्य कर रहा है, विशेष तौर से तब, जब अभिकर्ता द्वारा किए गए कार्य, स्वामी के लिए उपयोगी तथा अभिकर्ता के लिए भी महंगे होते हैं, और जहां अभिकर्ता द्वारा किए गए कार्यों का अवलोकन करना स्वामी के लिए महंगा होता है। अक्सर, स्वामी अभिकर्ता द्वारा शोषित हुए जाने की संभावना से पर्याप्त सरोकार रखते हैं और इसलिए वह लेन-देन में शामिल नहीं होना चाहते हैं, जबकि यह दोनों के लिए पारस्परिक रूप से लाभकारी है, एक उप इष्टतम परिणाम हो सकता है जो समग्र कल्याण को कम कर सकता है। अभिकर्ता द्वारा, स्वामी के हितों से विचलन को एजेन्सी की लागतें कहते हैं। स्वामी–अभिकर्ता समस्या, निजी उपक्रमों और सार्वजनिक उपक्रमों दोनों में पाई जा सकती है। इस स्वामी–अभिकर्ता समस्या से बचने का एक तरीका यह हो सकता है कि एक ऐसा प्रभावकारी प्रोत्साहन तंत्र बनाया जाए, जहां अभिकर्ता को लाभ के कुछ हिस्से से जोड़ा जाए ताकि अभिकर्ता एवं स्वामी के उद्देश्य मिल जाएं। उदाहरण के लिए, प्रबन्धक (अभिकर्ता) को कंपनी के अंशों में से कुछ भाग दिया जाएं ताकि वह कार्य को अपनी पूरी क्षमता से करे तथा कामचोरी ना करें।

बोध प्रश्न 2

1) नैतिक जोखिम को परिभाषित कीजिए? इसके क्या परिणाम होते है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) स्वामी अभिकर्ता समस्या का क्या अर्थ है? यह किस वजह से उत्पन्न होती है? इसे कैसे सुधारा जा सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

8.6 सार-संक्षेप

वर्तमान इकाई में, बाजार की उस स्थिति की चर्चा की गई है, जब व्यापार में सम्मिलित अभिकर्ताओं के पास पूर्ण एवं सममित सूचना की मान्यता, पूर्ण प्रतियोगिता में नहीं पाई जाती है। असममित सूचना की उपस्थिति तब होती है, जब व्यापार के एक पक्ष के पास दूसरे पक्ष से ज्यादा सूचना होती है। यह स्थिति संसाधनों का अकुशल आवंटन के साथ बाजार को असफलता की ओर ले जाती है। इस प्रकार का अकुशल समाधान, विपरीत चुनाव के कारण उत्पन्न होता है। यह तब होता है जब असममित सूचना होती है। विपरीत चुनाव में उच्च गुणवत्ता की वस्तुएं या कर्मचारी

बाजार छोड़ देते हैं और बाजार में अनिवार्य रूप से निम्न गुणवत्ता की वस्तुएं एवं कर्मचारी ही रह जाते हैं। असममित जानकारी से पीड़ित बाजार के उदाहरण हैंः पुरानी कारों का बाजार, स्वास्थ्य बीमा बाजार, ऋण का बाजार, श्रम का बाजार, आदि। असममित सूचना की उपस्थिति से समाज में अचल भार हानि होती है, क्योंकि संसाधनों का कुशल आवंटन नहीं हो रहा होता है। असममित सूचना की उपस्थिति में, संतुलन को प्राप्त करने का एक उपाय बाजार संकेतन है। इस इकाई में, आगे नैतिक जोखिम की चर्चा की गई, जो एक अभिकर्ता द्वारा किए गए कार्य को दूसरे अभिकर्ता द्वारा ना देखे जाने से कार्य के दौरान हुई कामचोरी से उत्पन्न होता है। यह आमतौर से स्वामी–अभिकर्ता समस्या के रूप में जाना जाता है। इस स्वामी–अभिकर्ता समस्या में, अभिकर्ता अपने स्वामी के लक्ष्यों के पीछे लगने की बजाय अपने स्वयं के लक्ष्यो के पीछे लगा रहता है।

8.7 संदर्भ ग्रंथादि

Mankiw, N.G., (2007). Principle of Microeconomics, 4th edition, Thomason Higher Education USA

Bernheim B.D and Whinston M.D, (2009). Microeconomics, Tata MacGraw Hill, New Delhi

Varian H.R, (2010). Intermediate microeconomics, W.W. Norton and Company

Stiglitz J.E and Walsh C.E, (2010). Principles of microeconomics, W.W Norton and Company

8.8 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) भाग 8.2 तथा 8.3 देखें तथा उत्तर दें

2) उपभाग 8.3.1 देखें तथा उत्तर दें

3) भाग 8.4 देखें तथा उत्तर दें

बोध प्रश्न 2

1) भाग 8.5 देखें तथा उत्तर दें

2) उपभाग 8.5.1 देखें तथा उत्तर दें

शब्दावली

इकाई 1

स्थिर प्रतिफल : आदानों में वृद्धि दर के अनुरूप ही उत्पादन में वृद्धि दर होने की स्थिति स्थिर प्रतिफल कहलाती है।

अनुबंध वक्र : एजवर्थ बॉक्स में दो वस्तुओं के समोत्पाद वक्रों के स्पर्श बिंदुओं का बिंदुपथ अनुबंध वक्र कहलाता है।

ह्रासमान प्रतिफल : जब उत्पादन में वृद्धि की दर आदानों में वृद्धि दर से कम होती है तो ह्रासमान प्रतिफल की स्थिति होती है।

दक्षता : ऐसी आर्थिक स्थिति जिसमें सभी संसाधन अनुकूलतम रूप से रोज़गार में लगे हों तथा सभी आर्थिक लाभ इस सीमा तक चुक जाते हैं कि किसी एक व्यक्ति की सहायता किसी अन्य को हानि पहुँचा कर ही की जा सकती है।

पूर्ण रोज़गार : जब अर्थव्यवस्था में सभी संसाधन पूरी तरह से रोज़गार में लगे हों।

समता : वितरण की वह अवस्था जिसमें सभी एजेंटों को समान हिस्सा प्राप्त हो रहा हो।

प्रथम क्षेम प्रमेय : प्रथम क्षेम प्रमेय सुनिश्चित करती है कि पूर्ण प्रतियोगिता वाला संतुलन पैरेटो दक्ष होता है।

सामान्य संतुलन : सामान्य संतुलन सिद्धांत संपूर्ण आर्थिक बाज़ार के कार्यकरण की व्याख्या करता है। इसके अंतर्गत अर्थव्यवस्था के सभी बाज़ार एक साथ संतुलन में होते हैं।

पैरेटो दक्षता/अनुकूलतमता : संसाधनों के आबंटन की ऐसी स्थिति जहाँ किसी अन्य को खराब स्थिति में पहुँचाए बिना किसी अन्य को बेहतर स्थिति में न लाया जा सके।

पैरेटो अदक्ष : संसाधनों के आबंटन की ऐसी स्थिति जिसमें किसी को खराब स्थिति में पहुँचाए बिना किसी अन्य को बेहतर स्थिति में पहुँचाए जाने की संभावना हो।

पैरेटो संतुलन : अन्य सभी साधनों एवं बाज़ारों को स्थिर मानते हुए किसी एक एकल बाज़ार में आर्थिक संतुलन की अवधारणा।

पूर्ण प्रतियोगिता : पूरी सूचना से युक्त बड़ी संख्या में क्रेताओं और विक्रेताओं से युक्त बाज़ार जहाँ सभी कीमतग्राही हों और किसी भी रूप में कीमत को प्रभावित करने की स्थिति में न हों।

उत्पादन संभावना वक्र/प्रत्यावर्तन वक्र : संसाधनों एवं प्रौद्योगिकी की दी हुई स्थिति के अंतर्गत अर्थव्यवस्था में उपलब्ध सभी संसाधनों को पूर्ण रोज़गार में रखते हुए दो वस्तुओं को उत्पादित किए जा सकने वाले विभिन्न संयोजनों का प्रदर्शित करने वाला वक्र।

द्वितीय क्षेम प्रमेय : द्वितीय क्षेम प्रमेय बताती है कि किसी भी पैरेटो दक्ष आबंटन को एक प्रतिस्पर्धी बाज़ार संतुलन के रूप में दर्शाया जा सकता है।

इकई 2

अधिमानों का योगीकरण : यह व्यक्तिगत अधिमानों को एक साथ जोड़कर सामाजिक अधिमान के रूप में व्यक्त करने का एक तरीका है।

बेंथम का सामाजिक क्षेम फलन : यह एक ऐसा सामाजिक क्षेम फलन है जो व्यक्तिगत उपयोगिता फलनों से व्युत्पन्न किया जाता है। इसे निम्नलिखित प्रकार व्यक्त करते हैं : $W(u_1, \ldots\ldots, u_n) = \sum_{i=1}^{n} u_i$

बर्गसन-सैम्युल्सन सामाजिक क्षेम फलन : इसे व्यक्तिगत क्षेम फलन के रूप में भी जाना जाता है। इसे $W = W(u_1 \ldots\ldots, u_n)$ द्वारा व्यक्त करते हैं जहाँ U_i $(i = 1 \ldots n)$ व्यक्तिगत उपयोगिता फलन होते हैं। जो क्रमवाचक फलन होते हैं और यह बताते हैं कि उपयोगिता या संतुष्टि के साथ कोई व्यक्ति क्या क्रम रखता है।

उत्पाद मिश्रण में दक्षता : उत्पादन एवं विनिमय में पैरेटो दक्षता

सम क्षेम वक्र : दो व्यक्तियों की उपयोगिता के ऐसे संयोग जहाँ क्षेम का स्तर एक समान रहता है।

समग्र दक्षता : उत्पाद मिश्रण में दक्षता। उत्पादन एवं विनिमय में पैरेटो दक्ष आबंटन की स्थिति।

रॉल्सन समाज क्षेम फलन : इसे अधिकतम सामाजिक क्षेम भी कहा जाता है। $W(u_1, \ldots\ldots, u_n) = \min\{u_1, \ldots\ldots, u_n\}$। यह फलन समाज में सबसे खराब स्थिति वाले एजेंट के क्षेम पर विचार करता है।

सामाजिक क्षेम फलन : व्यक्तिगत क्षेम फलनों का योग ही सामाजिक क्षेम फलन है। यह व्यक्तिगत अधिमानों के फलनों को सामाजिक क्षेम के एक फलन के रूप में व्यक्त करता है।

उपयोगिता संभावना समुच्चय : उपयोगिता संभावना समुच्चय दो व्यक्तियों के उपयोगिता समुच्चयों को प्रदर्शित करता है।

उपयोगिता संभावना सीमा : उपयोगिता संभावना समुच्चय को व्यक्त करने वाला वक्र या सीमा को उपयोगिता संभावना फ्रंटियर कहा जाता है। इसमें सभी पैरेटो दक्ष आबंटन शामिल होते हैं।

मूल्य निर्णयन : ''क्या अच्छा है और क्या नहीं'' इस बारे में लोगों के व्यक्तिगत विचार और विश्वासों से जुड़ी अवधारणा।

क्षेम अर्थशास्त्र : अर्थशास्त्र की वह शाखा जो समग्र सामाजिक क्षेम पर विचार करती है। इसका लक्ष्य आर्थिक नीतियों को विकसित करने का होता है जो विभिन्न प्रकार की क्षेम

समस्याओं और मुद्दों से संबंधित होती है। मूल्य निर्णयन क्षेमवादी अर्थशास्त्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इकाई 3

उपभोक्ता की बचत : किसी वस्तु या सेवा के उपभोग से वंचित रहने की बजाय कोई उपभोक्ता जो कीमत भुगतान करने के लिए तैयार रहता है और वास्तव में जो कीमत भुगतान करता है उसके बीच का अंतर ही उपभोक्ता की बचत है।

विशुद्ध (निवल) हानि : बाज़ार के भीतर संसाधनों के आर्थिक दृष्टि से अदक्ष आबंटन से उत्पन्न आर्थिक दक्षता में हुई हानि।

पैमाने की बचतें : किसी फर्म द्वारा उत्पादन के पैमाने में वृद्धि किए जाने पर दीर्घकालीन औसत लागत में कमी आने के रूप में लागत में जो लाभ प्राप्त होता है उसे पैमाने की बचत कहते हैं।

प्रतिलोम माँग फलन : प्रतिलोम माँग फलन के अंतर्गत कीमत को मात्रा के फलन P(Q) के रूप में व्यक्त किया जाता है।

लर्नर निर्देशांक : लर्नर निर्देशांक एकाधिकारी शक्ति का माप है। इसे $\frac{P(Q)-MC}{P(Q)}$ TR द्वारा कीमत-लागत मार्जिन के रूप में व्यक्त किया जाता है जहाँ TR उत्पाद को बाज़ार में बेचने से प्राप्त कुल आगम है। यह उत्पादित मात्रा तथा कीमत के गुणनफलन से प्राप्त होता है।

नैसर्गिक एकाधिकार : नैसर्गिक एकाधिकार उस समय उत्पन्न होता है जब कोई फर्म विशिष्ट कच्चे माल, प्रौद्योगिकी या किसी अन्य कारक के स्वामित्व के कारण किसी अन्य फर्म की तुलना में किसी वस्तु या सेवा की संपूर्ण माँग को पूरा करते हुए आपूर्ति कर सकती है।

कीमत विभेद : किसी एकाधिकारी फर्म द्वारा अपने द्वारा वस्तु या सेवा व अलग-अलग क्रेताओं से अलग-अलग कीमत वसूलना।

माँग की कीमत लोच : किसी वस्तु की कीमत के प्रति उसकी माँग में होने वाले परिवर्तन की प्रवृत्ति।

उत्पादक की बचत : कोई उत्पादक अपने द्वारा उत्पादित वस्तु या सेवा की जो कीमत प्राप्त करना चाहता है और बाज़ार में जो कीमत वास्तव में प्राप्त करता है उसके अंतर को उत्पादक की बचत कहते हैं।

इकाई 4

आबंटनात्मक दक्षता : आबंटनात्मक दक्षता उस अवस्था में उत्पन्न होती है जब संसाधन इस प्रकार से आबंटित किए जाएं कि समाज यथासंभव अधिक बेहतर अवस्था में हो। यह उसी अवस्था में होता है जब किसी वस्तु का उत्पादन उस स्तर पर किया जाय जहां उससे समाज को प्राप्त होने वाला सीमांत आगम उस वस्तु को उत्पादित करने पर

आयी सीमांत लागत के बराबर हो। पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत आवंटनात्मक दक्षता सुनिश्चित होती है क्योंकि वस्तु की कीमत उसकी सीमांत लागत के बराबर होती है (MR = MC = AR)। लेकिन एकाधिकार एवं एकाधिकारिक प्रतियोगिता दोनों में ही वस्तु की कीमत उसकी सीमांत लागत से अधिक होती है इसलिए आबंटनात्मक दक्षता नहीं पायी जाती।

विशुद्ध (निवल) हानि (Dead Weight Loss) : संतुलन उत्पादन प्राप्त न हो सकने या प्राप्त न हो पाने की दशा में उपभोक्ता की बचत तथा उत्पादक की बचत के योग के रूप में मापित सामाजिक क्षेम में हुई हानि को विशुद्ध हानि कहा जाता है। एकाधिकारिक प्रतियोगिता एवं एकाधिकार दोनों में ही फर्में पूर्ण प्रतियोगी फर्म की तुलना में कम उत्पादन करती हैं तथा ऊँची कीमत वसूलती हैं इसलिए इनमें विशुद्ध हानि उत्पन्न होती है।

आर्थिक लाभ : फर्म के कुल आगम एवं अंतर्जात तथा बहिर्जात लागतों के योग के बीच अंतर को आर्थिक लाभ कहते हैं।

क्षमता अतिरेक : एकाधिकारिक प्रतियोगिता का एक विशिष्ट अभिलक्षण है। इसे उत्पादन लागत को न्यूनतम स्तर पर रखने के लिए उत्पादन के वर्तमान स्तर को बढ़ाने के रूप में मापा जाता है।

अपूर्ण प्रतियोगिता : पूर्ण प्रतियोगिता के किसी एक या एक से अधिक अभिलक्षण (जैसे कि समरूप और सजातीय वस्तुएं, क्रेताओं और विक्रेताओं की बहुत अधिक संख्या, क्रेताओं और विक्रेताओं को पूर्ण जानकार बाज़ार में फर्मों के प्रवेश या बाहर जाने पर किसी प्रकार का प्रतिबंध न होना, कोई सरकारी हस्तक्षेप न होना) की अनुपस्थिति वाले बाज़ार को अपूर्ण प्रतियोगिता कहा जाता है।

विद्यमान फर्म : बाज़ार में परिचालित फर्म

न्यूनतम दक्ष पैमाना : उत्पादन का वह स्तर जहाँ पर पैमाने की आंतरिक बचतों का पूर्ण दोहन किया जा चुका हो ताकि दीर्घकालीन लागतों को न्यूनतम स्तर पर लाया जा सके। उत्पादन का वह स्तर जहाँ उत्पादक ने उत्पादक दक्षता को प्राप्त कर लिया हो।

गैर-कीमत प्रतियोगिता : अपने-अपने विभेदीकृत उत्पादों की बिक्री को बढ़ाने के लिए उत्पादक फर्मों द्वारा कीमत से इतर अपनाए जाने वाले अन्य उपाय जैसे कि व्यापक विज्ञापन, उत्पाद नवोन्मेष, बेहतर वितरण, बिक्री पश्च सेवाएं आदि।

सामान्य लाभ : इसे शून्य आर्थिक लाभ भी कहा जाता है। यह फर्म के कुल आगम एवं कुल लागत के बीच का अंतर होता है।

उत्पादक दक्षता : न्यूनतम लागत के स्तर पर बिना किसी नुकसान के किया जाने वाला उत्पादन। यह पूर्ण प्रतियोगिता के

अंतर्गत तो प्राप्त होती है लेकिन एकाधिकार और एकाधिकारिक प्रतियोगिता के अंतर्गत प्राप्त नहीं होती।

बिक्री लागतें : विभेदीकृत उत्पाद के लिए मांग में वृद्धि किए जाने हेतु प्रोन्नयन पर किया गया खर्च।

इकाई 5

संगुट : सम्मिलित रूप से अधिकतम लाभ कमाने तथा अनिश्चितता घटाने के लिए विभिन्न अल्पाधिकारियों के बीच एक प्रत्यक्ष औपचारिक अभिसंधि।

अभिसंधि : विभिन्न प्रतिद्वंद्वियों के बीच प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कीमत, बाज़ार अंश आदि पर समझौता।

प्रबल फर्म : ऐसी फर्म जिसका बाज़ार अंश अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी की अपेक्षा बहुत महत्त्वपूर्ण हो।

छोटी-छोटी फर्में : ऐसी फर्मों का समूह जिनका सांझा बाज़ार अंश भी महत्त्वहीन हो।

नैश संतुलन : ऐसी स्थैर्यपूर्ण अवस्था जहाँ अन्य सभी की युक्तियों को जानते हुए प्रत्येक फर्म यथासंभव श्रेष्ठतम व्यवहार करती है। इस प्रकार किसी के पास भी अपनी वर्तमान युक्ति से पलायन करने की कोई संप्रेरणा नहीं बचती।

अल्पाधिकार : ऐसी बाज़ार व्यवस्था जिसमें गिनी-चुनी फर्में हों तथा जिनके व्यवहार में काफी परस्पर निर्भरता हो।

प्रतिक्रिया वक्र : इसे श्रेष्ठतम प्रतिक्रिया फलन भी कहा जाता है– यह प्रतिद्वंद्वियों द्वारा चुने गए व्यवहार के प्रति किसी फर्म द्वारा चुने जा सकने वाली अभीष्टतम (अधिकतम लाभ) अनुक्रियाओं का बिंदु पथ है।

परोक्ष या निहित अभिसंधि : बिना औपचारिक घोषणा या युक्ति के स्पष्टीकरण के फर्मों द्वारा परस्पर सहमति।

इकाई 6

पश्च-आगमन : उपद्यूत संपूर्ण नैश संतुलन समस्या को हल करने की एक विधि। इसमें द्यूत वृक्ष के अंतिम छोर से इष्टतम युक्ति के अन्वेषण से प्रारंभ कर वृक्ष के मूल या प्रारंभ तक जाते हैं।

प्रबल युक्ति : ऐसी युक्ति जो प्रतिद्वंद्वियों की किसी युक्ति के बावजूद एक खिलाड़ी को श्रेष्ठतम प्रतिप्राप्ति देती हो।

प्रबल युक्ति संतुलन : सभी खिलाड़ियों द्वारा अपनी-अपनी प्रबल युक्तियों के प्रयोग की अवस्था में प्राप्त हुआ संतुलन।

दमित युक्ति : किसी खिलाड़ी की ऐसी युक्ति, प्रतिद्वंद्वी चाहे जो युक्ति अपनाएं, उसकी अपनी ही किसी न किसी अन्य युक्ति से निकृष्ट रह जाती हो।

द्यूत वृक्ष : एक निदेशित द्यूत चित्र जिसमें ग्रंथि बिंदु चयन कर रहे खिलाड़ी को दर्शाते हैं। मूल बिंदु से उद्‌गमित शाखाएं

यह दिखाती हैं कि उस खिलाड़ी ने क्या विकल्प अपनाया है। इस वृक्ष के अंतिम छोरों पर हमें तत्संबंधी प्रतिप्राप्तियाँ मिलती हैं।

मिश्रित युक्तियाँ : एक संभाव्यता आवंटन जो प्रत्येक उपलब्ध विकल्प के चुने जाने की संभाव्यताएँ दर्शाती हैं।

नैश संतुलन : ऐसी युक्तियों का समुच्चय कि यदि अन्य खिलाड़ी पूर्ववत् व्यवहार करते रहें तो किसी को भी अपनी युक्ति बदलने की संप्रेरणा नहीं होती।

आनुक्रमिक 'चाल' द्यूत : ऐसा द्यूत जिसमें खिलाड़ियों के चाल चलने के क्रम नियत होते हैं और उन्हें उनसे पहले चल चुके खिलाड़ियों के निर्णयों के विषय में कुछ जानकारी होती है।

समसामयिक चाल द्यूत : इस द्यूत में सभी खिलाड़ी एक साथ अपनी चाल चलते हैं अतः किसी को यह नहीं पता होता कि प्रतिद्वंद्वियों ने क्या विकल्प चुने हैं।

उपद्यूत : द्यूत का एक उप समुच्चय जो किसी ग्रंथि बिंदु से (सभी सूचना समूहों से स्वतंत्र) प्रारंभ कर सभी अनुवर्ती ग्रंथि बिंदुओं को समाहित किए होता है।

उपद्यूत संपूर्ण नैश संतुलन : ऐसा युक्ति निरूपण जो मूल द्यूत के सभी उपद्यूतों का नैश संतुलन प्रदान करता हो।

इकाई 7

ऐरो (Arrow) का असंभवता प्रमेय (सिद्धांत) : गिआनाकोपोलिस के अनुसार, ऐरा (Arrow) की असंभवता प्रमेय (सिद्धांत) के अनुसार, ''कोई संविधान जो संक्रमिता, अप्रासंगिक विकल्पों की स्वतंत्रता तथा सर्वसम्मति का सम्मान करता है वह तानाशाही है।''

कॉस प्रमेय : रोनाल्ड कॉस द्वारा विकसित, इस प्रमेय के अनुसार, बाह्यताओं की उपस्थिति में, शामिल पक्षकारों के पास उचित संपत्ति अधिकार होने के कारण, (भले ही संपत्ति के अधिकार किसी भी पक्ष के स्वामित्व में हो) जब तक सौदेबाजी की लागत नगण्य हो, एक कुशल परिणाम की ओर ले जाते हैं।

बाह्यता : किसी असंबंधित तीसरे पक्ष द्वारा अनुभव किया गया एक आर्थिक क्रिया का लाभ या हानि।

मुफ्तख़ोरी की (राइडर) समस्या : एक प्रकार की बाज़ार विफलता जो तब पैदा होती है जब कोई व्यक्ति एक वस्तु की व्यवस्था करने की लागत में योगदान दिए बिना उस वस्तु के लाभों को प्राप्त करता है।

सौदा : मतों को बेचने से सहमत होना तथा एक-दूसरे की पसंदीदा पहल को समर्थन देना।

सीमांत निजी लागत (MPC) : एक वस्तु या सेवा की एक अतिरिक्त इकाई के उत्पादन के परिणामस्वरूप उत्पादक की कुल लागत में होने वाला परिवर्तन।

सीमांत सामाजिक लागत (MSC) : वस्तु के उत्पादकों द्वारा वहन की गई सीमांत निजी लागत तथा शामिल न होने वाले पक्ष द्वारा वहन की गई सीमांत बाह्य लागत, जैसे पर्यावरण या सामाजिक लागतें जो वस्तु के उत्पादन में उत्पन्न होती हैं का योग सीमांत सामाजिक लागत कहलाती है।

बाज़ार विफलता : वह आर्थिक स्थिति जो एक मुक्त बाज़ार में वस्तुओं और सेवाओं के अक्षम आबंटन के रूप में परिभाषित हो।

गैर-अपर्वजक वस्तु : एक वस्तु जिसके उन उपभोक्ताओं को रोकना संभव नहीं है जिन्होंने इसके लिए भुगतान नहीं किया है।

उपभोग में गैर-प्रतिद्वंद्वी वस्तु : ऐसी वस्तु, जिसका एक उपभोक्ता द्वारा उपभोग करना, एक साथ दूसरे उपभोक्ता द्वारा उपभोग में रुकावट नहीं डालता।

सार्वजनिक वस्तुएँ : वह वस्तुएँ जो गैर-अपवर्जक तथा गैर-प्रतिद्वंद्वी दोनों हैं, जिसमें व्यक्तियों को इसके प्रयोग करने से रोका नहीं जा सकता तथा जहाँ एक व्यक्ति द्वारा इसका प्रयोग, अन्यों के लिए इसकी उपलब्धता को कम नहीं करता है।

सामाजिक चयन सिद्धांत : समूहिक निर्णय प्रक्रियाओं और कार्यप्रणालियों का अध्ययन।

इकाई 8

विपरीत चयन : आरंभ में इसे बीमा सिद्धांत में परिभाषित किया गया था, जिसमें एक ऐसी स्थिति की वर्णन किया गया, जहां बीमा करने वाले तथा बीमा पालिसी धारक के बीच असममित सूचना एक ऐसी स्थिति में ले जाती है, जहां बीमा पालिसी धारक द्वारा किए गए दावों की हानि, बीमा शुल्क में मानी गई औसत हानि से अधिक होती हैं।

असममित सूचना : तब होती है जब आर्थिक लेन–देन में शामिल एक पक्ष के पास दूसरे पक्ष से अधिक वस्तुगत सूचना होती हैं।

लेमन के लिए बाजार : अमेरिका में, लेमन, खराब गुणवत्ता की कारों के लिए प्रयोग की जाने वाली एक अपरिष्कृत भाषा है। असममित सूचना की उपस्थिति में, खराब गुणवत्ता वाली कारें, अच्छी गुणवत्ता वाली कारों को बाजार से बाहर कर देती हैं, और पीछे लेमन (खराब गुणवत्ता वाली कारों) का बाजार रह जाता हैं।

नैतिक जोखिम : असममित सूचना के कारण उत्पन्न एक स्थिति जिसमें एक पक्ष व्याापार में तब शामिल होता है या शामिल होने पर विचार करता है, जब वह दूसरे पक्ष की जोखिम की स्थिति को ध्यान में रखते हुए सौदे करता है।

स्वामी-अभिकर्ता समस्या : यह तब उत्पन्न होती है जब, एक पक्ष (स्वामी) एक कार्य को दूसरे पक्ष (अभिकर्ता) को सौंप देता है, तथा उन दोनों के बीच असममित सूचना पाई जाती है।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) Hal R Varian (2010). Intermediate Microeconomics, a Modern Approach, W.W. Norton and Campany/Affiliated East-West Press (India), 8th Edition.

2) C. Snyder and W. Nicholson (2010). Fundamentals of Microeconomics, Cengage Learning (India).

3) Salvatere, D. (1983). Microeconomic Theory, Schaum's Outline Series.

4) Pindyck, Robert S. and Daniel Rubinfield, and Prem L. Mehta (2006). Microeconomics, An imprint of Pearson Education.

5) Case, karl E. and Ray C. Fair (2015). Principles of Economics, Pearson Education, New Delhi.

6) Stiglitz, J.E. and Carl E. Walsh (2014). Economics, viva Books, New Delhi.

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

QR Code -website ignou.ac.in

QR Code -e Content-App

QR Code - IGNOU-Facebook
(@OfficialPageIGNOU)

QR Code Twitter Handel
(OfficialIGNOU)

INSTAGRAM
(Official Page IGNOU)

QR Code -e Gyankosh-site

IGNOU SOCIAL MEDIA

QR Code generated for quick access by Students

IGNOU website

eGyankosh

e-Content APP

Facebook (@offical Page IGNOU)

Twitter (@ Offical IGNOU)

Instagram (official page ignou)

Like us, follow-us on the University Facebook Page, Twitter Handle and Instagram

To get regular updates on Placement Drives, Admissions, Examinations etc.

MPDD/IGNOU/P.O. 4K/July, 2021

ISBN: 978-93-91229-69-6